श्री नाथ सम्प्रदाय

आरती भजन संग्रह (उपासना)

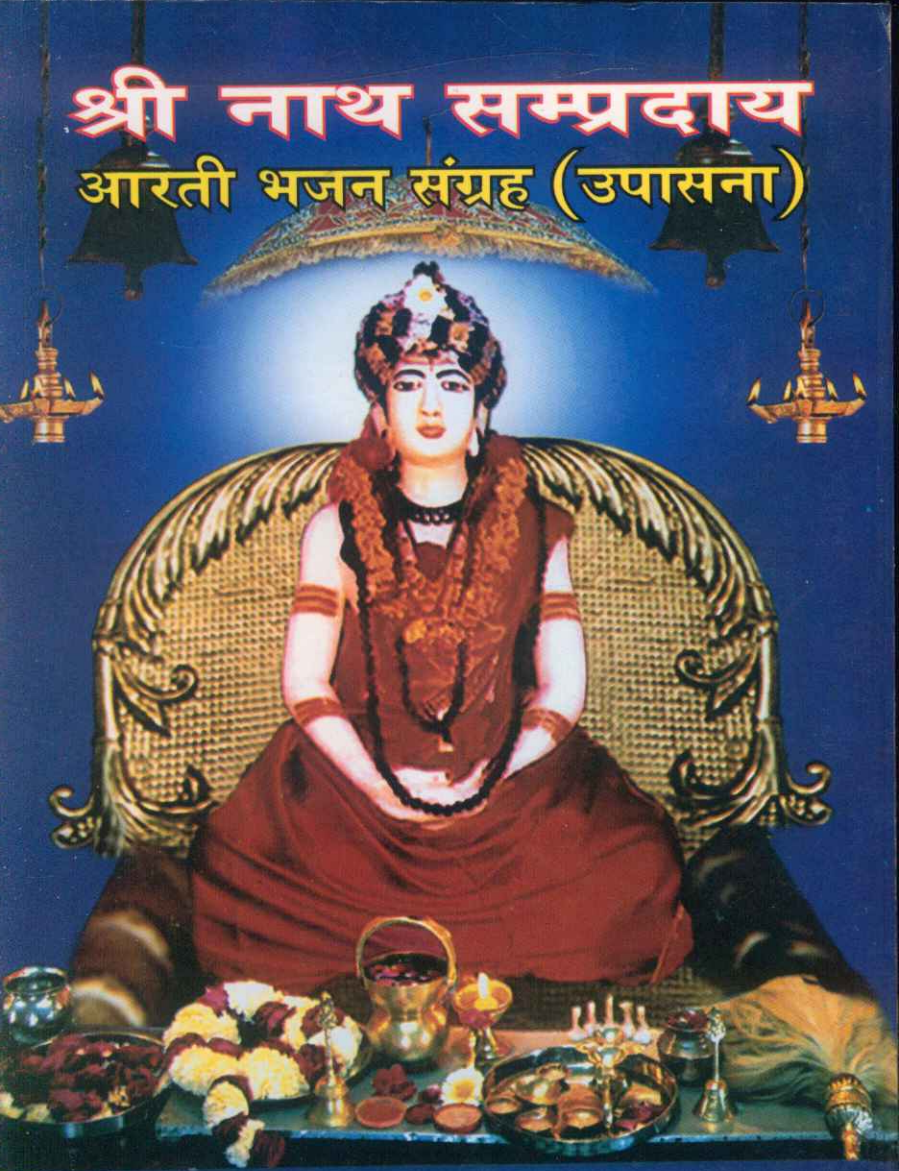

काव्य लेखन एवं संकलन–योगी विलास नाथ

प्रकाशक–अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा
गुरु गोरक्षनाथ मंदिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) ☎ 01334–226583

।। आर्शीवचन ।।

अध्यक्ष

उपाध्यक्ष

महामंत्री

प्रिय शिष्य योगी विलासनाथ

शुभ आर्शीवाद

श्री नाथ सम्प्रदाय आरती भजन संग्रह इस काव्य रचनाओं को तथा संकलन को देखते हए प्रतित होता है। कि संसार में सभी जीव संसारिक बन्धनों से उबकर मन कि शान्ति एवं आनन्द कि खोज में रहते हैं। जिसमें श्रीमद्भगवत भक्ति एक श्रेष्ठ उपाय है। श्रीमद्भगवत की पूर्ण भक्ति ही अन्तर आत्मा का आनन्द है। इस संकलन एवं रचनाओं में श्रद्धा भाव एवं भक्ति के अनमोल शब्द रस, से भरे हुये हैं –भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, प्रसंग–अनुभूति संसारिक आदर्श, गुरु शिष्य परंम्परा विशेषतः उनकी उपासना आदि विषय रचना पर भी प्रकाश डाला है।

विशेषतः श्रीमद्भगवत, भक्ति, श्री गुरु गोरक्षनाथ एवं नवनाथ सिद्ध, शिव–शक्ति –भैरव गणेश इत्यादि सभी इष्टों की सगुण–निर्गुण उपासना भक्ति करने हेतु यह आरतीयाँ–भजन–प्रार्थना आदि शब्द के द्वारा भक्ति आनन्द लेने में विशेष सहायक होगा।

अतः भेष भगवान के नाथ सिद्ध योगेश्वर एवं नाथ भक्त–सेवक गणों को नाथ सिद्ध योगेश्वर एवं नाथ भक्त–सेवक गणों को उपासना–भक्ति–भजन करने हेतु आरती भजन की रचनाओं एवं कुछ प्रचलित संकलन–संग्रह करने का प्रयास किया है। ताकि सम्प्रदाय का प्रचार–प्रसार एवं पूजापाठ उपासना सरलता से हो सके। इसमें नाथ सम्प्रदायक परम्परा सभी पक्ष पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है! निश्चित रुप से यह सभी को भक्ति साधना में सहायक होगी।

इस विशेष कार्य हेतु कृपार्शीवाद देते हुये यह सतत् सद्कार्य करते हुये यशोभागी बनता रहे।

शुभकामनाओं के साथ!

शुभेच्छुक

योगी आनन्दनाथ (महामंत्री)

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार

श्री नाथ सम्प्रदाय
आरती-भजन-संग्रह

संकलन एवं काव्य लेखन

योगी विलासनाथ

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

फोन-01334-226583

Visit us at : www.yogigorakshnath.org, e-mail : media@yogigorakshnath.org

श्री बाबा मस्तनाथ मठ अस्थल बोहर

जिला रोहतक (हरियाणा)

14 जनवरी 2009 (मकर संक्रान्ति) सन् 2065, कृष्णपक्ष

प्रथम संस्करण-2000 प्रति

मूल्य : 45/-

इस पुस्तक के किसी भी भाग एवं अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा।

मनोगत

ॐपरमानन्द-सच्चिदानन्द, अलख निरन्जन श्री गुरु गोरक्षनाथजी एवं श्री नवनाथ चौरासी सिद्ध तथा अनन्त सिद्ध एवं विभिन्न देवी-देवता इनके प्रसन्नता, साक्षात्कार के लिये, कृपा आशीर्वाद की प्राप्ति के लिये नाथ सम्प्रदाय, उनके सिद्ध-गुरु-शिष्य परम्परा-नाथ भक्त, सेवक अनेक प्रकार की उपासनायें करते हैं जिसमें नवविधा भक्ति प्रचलित हैं जिसमें पूजा, पाठ, आरतियाँ, स्तुति, प्रार्थना, भजनों, श्रवण मनन चिन्तन के द्वारा नाथ सिद्धों का एवं दैवी शक्ति भक्ति का आनन्द लेते हैं। जिसका अनन्त-विस्तृत-विस्तार हुआ है।

व्रत वैकल्य जप अनुष्ठान पूजापाठ योगध्यान-योगज्ञान तपस्यायें सिद्धि विधियाँ, विभिन्न तीर्थ यात्रायें दानपुण्य आदि इन सभी बातों से थोड़ा सा हटकर मन को प्रसन्नता के लिए तथा आनंदित होने के लिये, उसी प्रकार हमारे नाथ सिद्धों साधु सन्त भक्तों की अपेक्षा पूर्ति के लिये यह नाथ सम्प्रदाय आरती भजन संग्रह पुस्तक बनाने का प्रयास किया है। जिसमें नाथ सम्प्रदाय की सभी आरतियाँ भजनों शब्द आदि का संकलन-संग्रहित किया गया है। कुछ काव्य रचनायें, शब्द रचनायें, भजन रचनायें, तो कुछ प्रचलित आरती भजन कुछ प्रासंगिक

तथा सत्संग श्रवण किये हुये तथा नाथ पारम्परिक रचनाओं का भी समावेश किया है।

इस संग्रह पुस्तिका में चित्ताकर्षण-मनाकर्षण-हृदय भाव चैतन्य भक्ति भाव आनन्द आरती भजनों द्वारा भक्तिमय उपासना का रंग रंगाने का प्रयास किया है। इन रचनाओं में प्रासंगिकता अनुभूति सत्संग आदि प्राकृतिक भूमिका होने के कारण स्वाभाविकता तथा सरलता पूर्वक रचनायें हुई है। इसमें प्रथम भाग में सम्पूर्ण आरतियाँ शब्द श्लोक प्रार्थनायें आराधनायें आदि के द्वारा उपासनाएं, तो द्वितीय भाग में भजनावली साखियाँ इत्यादि रचनायें की है। इन्हें संगीतबद्ध-लयबद्ध-तालसमेत गाने पर और भी मधुरता-गाम्भीर्य एवं रसिकता का स्वरूप हो जायेगा यह रचनायें जिसमें विशिष्ठपूर्वक वैविध्य, आनन्दपूर्वक-पारमार्थिक कृपा से आत्म दर्शन, ब्रह्म दर्शन, श्री नाथ दर्शन को पात्र ऐसी उत्स्फूर्त शब्द रचनायें अविष्कृत हुयी हैं।

अपेक्षा करते है कि नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध योगेश्वर भक्त तथा सेवकगण आदि सभी इन काव्य पदों का आनन्द-रस लेकर परमात्मानन्द का अनुभव करेंगे।

धन्यवाद।

योगी विलासनाथ

योगी विलासनाथ

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष

बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार

॥ निवेदन ॥

श्री नाथ सिद्ध योगेश्वर-साधूसंत जब अपने मठ मन्दिर एवं आश्रमों में तथा भक्त सेवकगण अपने घर-मकानों में तथा सार्वजनिक, सामुदायिक पारिवारिक एकता में अपने ईष्ट (श्री गणेश, शिव-शक्ति, गुरु गोरक्षनाथ, नवनाथ, ८४ सिद्ध-भैरव आदि) देवताओं की उपासना अर्थात् भजन पूनज अर्चन नित्यपाठ-प्रसाद भोग-व्रत वैकल्प, सतसंग जागरण इत्यादि धार्मिक उत्सवों के उपरान्त जब आरती-भजन-प्रार्थना-परिक्रमा इत्यादि का अवसर आता है। तब यह पुस्तक के आरती भजनों का भक्तिपूर्वक उपयोग करके आनंद को प्राप्त कर सकते है।

॥ भाव ॥

यह है प्रार्थना ! यह है अन्तर नाद ! यह है भक्ति के अनमोल स्वर ! यह है भक्ति रस के भरे भजन ! यह है अमित पवित्र शब्द ! यह है हृदय से प्रगट होने वाला अनहद नाद ! अन्तर जगत के भक्ति मय पवित्र यात्रा में भक्तों के हृदय को छूने वाले अन्तर मन में गुंजन करने वाले यह है भक्ति के स्वर अर्थात् भजन।

आवो चले भक्ति के अनन्त यात्रा कि ओर भक्ति मुक्ति कि ओर...

श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

योगी विलासनाथ

योगी विलासनाथ

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष
बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार

।। अनुक्रमाणिका ।।

(प्रथम भाग)

विषय	पृष्ठ संख्या
आरतियाँ–वन्दना–स्तुति प्रार्थनाएं–	१
१. श्री गणेश–वन्दना	२
२. श्री गणेश, सरस्वति, सतगुरु वन्दना	२
आरतियाँ	३
३. आरती श्री गणेश जी की (प्रचलित)	३
४. प्रार्थना	३
सत्गुरुजी	४
१. सत्गुरु स्तुति	४
२. सत्गुरु वन्दना	५
३. सत्गुरु प्रार्थना	५
४. सत्गुरु परिक्रमा	६
श्री शुम्भजती गुरु गोरक्षनाथजी	८
१. श्री मद्गोरक्ष पंचदश स्तोत्रम्	८
गुरु गोरक्षनाथजी की आरतियाँ	१२
१. आरती श्री नाथ निरंजन की	१२
२. प्रातः मंगल आरती	१४
३. गुरु गोरक्षनाथ आरती (प्रातः)	१५
४. श्री नाथजी की मंगल आरती	१७
५. गुरु गोरक्ष नाथ जी की आरती	२०
६. आरती गुरु गोरक्षनाथजी की	२१
७. आरती गुरु जय गोरक्षनाथा	२२
८. जब गायी आरती पूरणनाथजी ने	२४
९. जब गायी आरती चरपट (चर्पटी) नाथ जी ने	२५
१०. श्री गुरु गोरक्षनाथजी की संध्या आरती	२६
११. आरती गुरु गोरक्षनाथ जी की (संध्या)	२९
१२. आरती श्री पात्र देवता की	३२
१३. प्रार्थना ॐ शिव गोरक्ष योगी (पारम्पारीक)	३४
१४. श्री गोरक्षनाथ जी की प्रार्थना	३६

विषय	पृष्ठ संख्या
१५. श्री गोरखनाथजी की स्तुति	३७
१६. शबद्	३८
१७. श्री गोरक्षनाथ जी की स्तुति	३९
श्री नवनाथ एवं चौरासी सिद्ध (आरतियाँ)	**४१**
१. श्री नवनाथ नाम स्वरूप जाप	४२
२. आरती नवनाथों की	४३
३. आरती श्री नवनाथ दर्शन	४५
४. श्री नवनाथ नाम कवित्व	५०
५. श्री नवनाथ–स्वरूप	५१
६. तूही तुम नवनाथ (प्रार्थना)	५२
श्री नाथ योगी चौरासी सिद्ध	**५४**
१. श्री चौरासी सिद्ध गायत्री पाठ	५४
२. आरती चौरासी सिद्धों की	५७
३. प्रार्थना चौरासी सिद्धों की	६०
शिव–आरतियाँ	**६२**
१. शिव आराधना	६२
२. शिव स्तुति स्तोत्रम्	६४
३. भगवान शिव शंकर जी की आरती (प्रचलित)	६५
४. शिव प्रार्थना	६८
देवी (शक्ति माताजी) की आरतियाँ	**६९**
१. श्री शक्ति अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं	६९
२. आरती श्री दुर्गा जी की (प्रचलित)	७२
३. अथ् ज्वाला काली सप्तवार स्तुति (प्रचलित)	७४
४. आरती माता हिंगलाज की	७७
५. आरती योगमाया जी की	७९
६. माई के ज्योत की (आगुआनियाँ) आरती	८२
७. आरती माता पद्मावती की	८५
जय बाबा भैरवनाथ जी	**८८**
१. श्री भैरवनाथ स्तुति	८९
२. श्री भैरवनाथजी की आरती	९०

(द्वितीय भाग)

विषय	पृष्ठ संख्या
भजनावली	९२
१. श्री गणेश (भजन)	९२
२. गजानना–गजानना (भजन)	९३
सद्गुरुजी के भजन	९३
१. मेरे दयालु गुरुदेव	९३
२. मेरे गुरुजी ने किये उपकार (भजन)	९५
३. नाथ गुरु बिना कौन हरे दुःख पीर (भजन)	९६
४. सतगुरु बिना दर्द ना जाने कोई (भजन)	९७
५. "आये मेरे घर सतगुरु जी" (भजन)	९७
६. "छोड़ो छोड़ो गर्व अभिमान" (भजन)	९८
७. गुरु बिना मुक्ति नहीं (शब्द विलास)	९९
८. आज भी है (शब्द विलास)	१०१
गुरु गोरक्षनाथजी के भजन	१०२
१. "शिव जती गोरक्ष" (भजन)	१०२
२. "देखो जोगी–गोरख दिवाना" (भजन)	१०४
३. गुरु गोरक्ष पुकार (भजन)	१०६
४. श्री नाथ दर्शन (भजन)	१०८
५. गुरु गोरक्षनाथ महान (भजन)	१०९
६. जय श्री योगी गोरक्षनाथ (भजन)	११०
७. "अलख निरंजन नाथ जी" (भजन)	१११
८. गुरु मछन्दर–गोरख का जोग (भजन)	११२
९. गुरु गोरक्षनाथजी (भजन)	११३
१०. बिरला ज्ञान (भजन)	११४
११. दिक्षा (भजन)	११५
१२. गुरु चेला (भजन)	११६
१३. गुरु चेला सत्संग (भजन)	११७
१४. अंत (भजन)	११९
१५. गोरख ब्रह्म बाणी (भजन)	१२०
१६. दिवाने बन्दे क्या सोचे दर्पण में (भजन)	१२२
१७. सोलह कड़ी गोरखनाथजी की (भजन)	१२३
१८. चलो रे देखे कौन देश बसे तुम जोगी (भजन)	१२७
१९. राजा भर्तृहरि गोरख भेंट (प्रसंग)	१२८

विषय	पृष्ठ संख्या
२०. कितना बदल गया इंसान	१३१
२१. श्री नाथ दरबार (भजन)	१३२
२२. सन्त महिमा (भजन)	१३६
२३. सिरबदा (भजन)	१३८
२४. चेतावनी (भजन)	१३९
२५. बंगला (भजन)	१४०
कैलाश पर्वत (मुक्ति धाम)	**१४१**
१. "ॐ मंगलम् ॐकार मंगलम्" (भजन)	१४२
२. कैलाश में नाच रहे भोले बाबा (भजन)	१४३
३. "भोले तेरे कैलाश में ज्योत जले" (भजन)	१४४
४. "कैलाश में डमरू बजाया" (भजन)	१४५
५. गंगा प्रवाह (भजन)	१४६
६. "बड़ा ही भोला भाला है" (भजन)	१४७
ध्यान साधना	१४९
१. उपसंहार	१४९
२. सद्गुरु धुन	१५०
३. गोरक्ष धुन	१५०
४. ब्रह्म स्वरूप (पूर्ण)	१५०
साखियाँ	सर्वत्र
(चित्रांकन)	
१. श्री गणेशाय नमः	१
२. सद्गुरु कृपा आशीर्वाद	४
३. श्री शम्भु जती गुरु गोरक्षनाथजी	८
४. श्री नवनाथ स्वरूप दर्शन	४१
५. श्री चौरासी सिद्ध	५४
६. भगवान शिव जी	६२
७. जय माँ दुर्गा देवी	६९
८. श्री भैरव नाथ जी	८८
९. "ले लो भजनानन्द"	९२
१०. जय जय नाथ श्री गोरक्षनाथ। जय जय नाथ शिव गोरक्षनाथ।।	१०२
११. कैलास मानसरोवर पर आगे आगे गोरख जागे	१४१
१२. आत्म–साक्षात्कार	१४९
मुखपृष्ठ एवं चित्रांकन–योगी विलासनाथ	

श्री नाथ सम्प्रदाय
आरती-भजन संग्रह
(उपासना)
प्रथम भाग
आरतियाँ-वन्दना-स्तुति-प्रार्थनाएं

।। श्री गणेशाय नमः।।

निवेदन :– आध्यात्मिक कर्म विधान में सर्वप्रथम श्री गणेशः अर्थात् श्री गणेश वन्दना–प्रार्थना करते है तथा आरतियों में भी प्रथमतः श्री गणेश जी की आरती तथा भजन गाते है।

फल :– निर्विघ्न कार्य सफल होगे, संकट दूर होगे विवाह–नौकरी–विद्या– ऋद्धि–सिद्धि की प्राप्ति होगी।

"श्री गणेश-वन्दना"

गजाननमहं वन्दे, गजकन्थड़रूपिणम्।
विघ्नहरणं सदा नौमि ऋद्धि-सिद्धि प्रदायकम्।।१।।
नमस्ते सृष्टिरूपाय, नाथ रूपाय ते नमः।
भक्तप्रियाय देवाय, नमस्तुभ्यं विनायक!।।२।।

* श्री गणेश, सरस्वति, सतगुरु वन्दना *

गं गं गणेशनाथाय।
कृपा करो, करुणाकराय।
स्वर साम्राज्ञी सरस्वति।
कर चित्त वास, मम मुढ़मति।।
सतगुरु मेरे, अलख निरन्जन।
कृपा के सागर, ज्ञान रन्जन।।

साखी

यहाँ दुनिया दो दिन की इनका कौन भरोसा।
इसमें कोई नहीं अपना क्यों पड़े तुम भूल भूलैसा।।
ध्वजा जो फड़के सुन्य में बाजे अनहद तूर।
नाम निशान के सामने पहुंचे बिरला सूर।।

।। आरतियाँ ।।

।। आरती श्री गणेश जी की ।। (प्रचलित)

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।
हार चढ़े पुष्प चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करे सेवा।। जय....
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी। जय....
अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया। जय....
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।

।। प्रार्थना ।।

ॐ गं गं गणपति नमो नमाय।
वक्रतुण्ड गजमुख एक दन्ताय।।
ज्ञानं ईश्वर ऋद्ध सिद्ध धराय।
कुरु मम कार्य सिद्ध विघ्नहराय।।
वन्दे गजबैली तं गजकन्थडाय।
नमो आदेश नमो आदेश नमो नमाय।।

।। सद्गुरु जी ।।

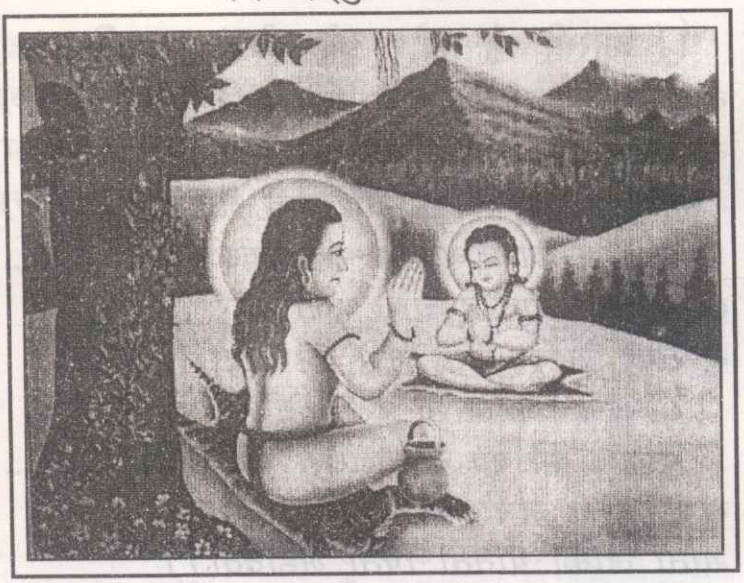

सद्गुरु कृपा आशीर्वाद

निवेदन :– श्री गणेश वन्दना के पश्चात् श्री सद्गुरु जी की वन्दना या प्रार्थना करते है जिससे मोक्ष मुक्ति की प्राप्ति होगी।

।। सतगुरु स्तुति।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुविष्णु गुरदेवो महेश्वरा
गुरुः साक्षात्परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवै नमः
ध्यानमूलं गुरोमूर्ति, पूजा मूलं गुरु पदम
मन्त्रमूलं गुरुरवाक्य मोक्ष मूलं गुरु कृपा
मन्त्र सत्यं पूजा सत्यं सत्यदेवं निरन्जनम्

गुरुरवाक्य सदा सत्यं सत्यंम अेकम परंपदम्
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविडम त्वमेव, त्वमेव सर्वम मम् देव देवाः
श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।।

।। सद्गुरु वन्दना।।

योग ध्यान ज्ञान आपसे ही तो पाया।
सर्वत्र तंत्र-मंत्र भई निर्मल काया।।
तन मन धन सब अर्पण किया।
भक्ति भव भाव आपको ही दिया।।
नकारो ना सेवा मेरी तुम अनन्ता।
करो कृपापात सत् गुरु नाथ सन्ता।।

।। सद्गुरु प्रार्थना ।।

सद्गुरु नाथा, नमन करुँ मैं, दर्शन तो दे दो।
मन मन्दिर में, वास करके पावन मम कर दो।।
प्रति दिन प्रातः बैठु आसन, मम कारण वर दो।
हृदय निवासी दया ही करके, परिवर्तन दे दो।।
सद्गुरु नाथा.....।।१।।

उपकार तुम्हरे, बहुत हुए हैं, तुम कारण तन देऊँ।
उपदेश तुम्हरे, इहपर नश्वर, मन उनमन पाऊँ।।
सद्गुरु नाथा.....।।२।।
कौन कहां पर, कौन कारण, जन-मन-तन दे दूँ।
करो मम ऐसा, अलख निरंजन, सब सम जन देखूँ।।
सद्गुरु नाथा.....।।३।।
संसार सागर, भ्रम तो माया, मन निर्मल कर दो।
जन्म मरण का, यह सब फेरा, मुक्त मम कर दो।।
सद्गुरु नाथा, नमन करुँ मैं, दर्शन तो दे दो।
मन मन्दिर में, वास करके, पावन मम कर दो।।४।।

।। सतगुरु परिक्रमा ।।

धन्य धन्य है, परिक्रमा सतगुरु नाथों की।
होंगी कृपा सत्वर दर्शन आत्माराम की
क्षणो क्षणी, अपरम्पार, पुण्य संच राशी।
सभी तीर्थ है, चरण कमल में, शिव शम्भो काशी।।
धन्य धन्य.....।।१।।

मृदंग ताल, ढोल बाजे, सतगुरु प्रेमानन्दी।
नाम संकीर्तन, नाचे भक्त, ब्रह्म आनन्दी।।
धन्य धन्य.....।।२।।
जन्म मरण के, बन्धन काटे, किये योग युक्ति।
गुरु मंत्र का, ध्यान धारे, मिले मोक्ष मुक्ति।।
धन्य धन्य.....।।३।।
अगम निगम ना, जाने महिमा, सतगुरु भक्ति का।
जीव शिव में, मिले तत्पर, सतगुरु संगी का।।
धन्य धन्य.....।।४।।
ज्ञान ध्यान में, सच्ची भक्ति, जानो तो बिरला।
और प्रचिति, पारस मनी, सोम कान्ता जैसा।।
धन्य धन्य.....।।५।।
परिक्रमा ही, करते-करते, आत्माराम देखा।
प्रगट भये जो गुरु गोरख, नाथ विलास देखा।।
धन्य धन्य.....।।६।।
धन्य-धन्य है, परिक्रमा, सतगुरु नाथों की।
होंगी कृपा सत्वर दर्शन आत्माराम की।।

।। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ।।

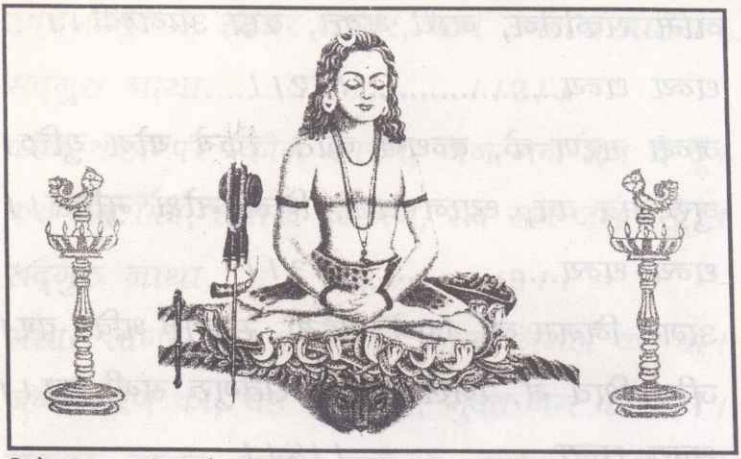

निवेदन :– श्री गणेश जी तथा सद्गुरु जी की वन्दना के पश्चात् अपने ईष्ट की अर्थात् गुरु गोरक्षनाथ जी के पूजन अर्चन तथा भोग लगाकर गोरक्ष चालीसा या कवच या गोरक्ष ज्ञान गोदड़ी या निम्न श्री मद् गोरक्ष पंच–दश स्त्रोतम् का पाठ करके फिर आरती भजन करना चाहिए। जिससे सभी प्रकार के संकटों से रक्षा होगी और योग ध्यान ज्ञान शान्ति, मुक्ति की प्राप्ति होगी।

✱ श्री मद गोरक्ष पंच–दश–स्तोत्रम् ✱

सूचना :– इस स्तोत्र का नित्य नियम पाठ करने से सभी संकटों का नाश होकर सुख समृद्धि की प्राप्ति होगी।

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐगुरुजी।
नमो आदेश सतगुरुनाथा नमो आदेश जगन्नाथा।
नमो आदेश सृष्टि नाथा, नमो आदेश पूर्ण नाथा।।

नमो आदेश दिव्य नाथा नमो आदेश मायानाथा।
नमो आदेश तत्वनाथा नमो आदेश योगनाथा।।
नमो आदेश नमो आदेश नमो गुरु गोरक्षनाथा।।१।।
नमो आदेश आत्मनंदा, नमो आदेश सच्चिदानंदा।
नमो आदेश भावानन्दा, नमो आदेश परमानन्दा।।
नमो आदेश विद्यानन्दा, नमो आदेश ज्ञानानंदा।
नमो आदेश योगानन्दा, नमो आदेश ब्रह्मानन्दा।
नमो आदेश, नमो आदेश नमो आदेश, गुरु
गोरक्षाय नित्यानन्दा.....।।२।।
नमो आदेश जतीश्वराय, नमो आदेश यतीश्वराय।
नमो आदेश सतीश्वराय, नमो आदेश ईश्वेश्वराय।।
नमो आदेश महेश्वराय, नमो आदेश सिद्धश्वराय।
नमो आदेश नरेश्वराय, नमो आदेश गुरुश्वराय।।
नमो आदेश नमो आदेश, नमो आदेश गुरु
गोरक्ष जगदिश्वराय.....।।३।।
नमो आदेश तमोहराय, नमो आदेश गमोहराय।
नमो आदेश भवहराय, नमो आदेश विघ्नहराय।।
नमो आदेश भ्रमहराय, नमो आदेश भयहराय।
नमो आदेश मायाहराय, नमो आदेश दुःखहराय।।

नमो आदेश नमो आदेश नमो आदेश, गुरु
गोरक्ष हरहरायेश्वराय.....।।४।।
नमो आदेश मन्त्रदाता, नमो आदेश तंत्रदाता।
नमो आदेश योगदाता, नमो आदेश ज्ञानदाता।।
नमो आदेश अन्नदाता, नमो आदेश सौख्यदाता।
नमो आदेश दयादाता, नमो आदेश आश्रयदाता।।
नमो आदेश, नमो आदेश नमो आदेश गुरु गोरक्ष पूर्ण
दाताईश्वराय.....।।५।।
नमो आदेश त्रिलोकपालका, नमो आदेश ब्रह्मपालका।
नमो आदेश प्रतिपालका, नमो आदेश सृष्टि पालका।।
नमो आदेश गुरुआज्ञा पालका, नमो आदेश भक्त पालका।
नमो आदेश गौ पालका, नमो आदेश यज्ञ पालका।।
नमो आदेश, नमो आदेश, नमो आदेश गुरु गोरक्ष
सकल गुण ज्ञानी पालका.....।।६।।
नमो आदेश योग ध्याना, नमो आदेश योगाग्याना।
नमो आदेश प्रेम घना, नमो आदेश कृपाघना।।
नमो आदेश आनन्दघना, नमो आदेश आत्मानन्दघना।
नमो आदेश शुभांगघना, नमो आदेश सर्वान्गुणघना।।
नमो आदेश नमो आदेश नमो आदेश गुरु
गोरक्षाय मनोजवः पूर्णघना.....।।७।।

नमो आदेश शाबर सिद्धों, नमो आदेश तंत्र-मंत्र सिद्धों।
नमो आदेश शस्त्रास्त्र सिद्धों, नमो आदेश घोराऽःघोर सिद्धों।।
नमो आदेश वेताल सिद्धों, नमो आदेश श्मशान सिद्धों।
नमो आदेश दुष्ट मुष्ठ सिद्धों, नमो आदेश भूतप्रेता जीत सिद्धों।
नमो आदेश, नमो आदेश, नमो आदेश, गुरु गोरक्षं
साम-दाम-दण्डाधिकारी सिद्धों.....।।८।।
नमो आदेश अग्निग्रो, नमो आदेश भद्र रुद्रो।
नमो आदेश कापालक्रियायो, नमो आदेश शवाक्रियायो।।
नमो आदेश महा विक्रालो, नमो आदेश महाकालो।
नमो आदेश चमत्कारो, नमो आदेश स्पोटकारो।।
नमो आदेश नमो आदेश नमो आदेश जती
गोरक्षाय रक्ष रक्ष, महाघोरो.....।।९।।
नमो आदेश कृपा करो, नमो आदेश रक्षा करो।
नमो आदेश दुःख हारो, नमो आदेश कष्ट हारो।
नमो आदेश दुष्ट मारो, नमो आदेश संकट तारो।
नमो आदेश भूतप्रेत माराय, नमो आदेश पालन काराय।
नमो आदेश नमो आदेश नमो आदेश जती
गोरक्षाय मम रक्ष रक्षाय .....।।१०।।

नमो आदेश अनन्त कोटी ब्रह्माण्डा।
कण कण सचराचरा। योगी राजा, राजराजेश्वरा
निरंजन निराकारा। परब्रह्म परमानन्दा आत्म साक्षात्कारी
आत्मानन्दा। परमईश्वरा सच्चिदानन्दा। निर्विकल्प
निरामया। ज्योति स्वरूपा। सदाशिव-शिवा स्वरूपा
शुन्यातित शून्यरूपा। ज्ञानतित ज्ञानरूपा। जती सती बाल
स्वरूपा। मोक्ष मुक्ति युक्ति स्वरूपा। चित्तशक्ति
चिदानन्दा। अलख निरंजन, अलख निरंजन गुरु गोरक्षनाथा
नमो आदेश। नमो आदेश। नमो आदेश नमो नमः। इदं
श्रीमद् गोरक्ष पंचदश स्तोत्रम्। सहृदय पठेन्नर त्रिकाल
प्रति दिनम्।। निर्विघ्न कुरु नाथं सुख सम्पन्न
फलप्रदायकम।। इती नाथ विलास विरचित श्री मद्
गोरक्षं पंच-दशस्तोत्र सम्पूर्णम्।

।। गुरु गोरक्षनाथ जी की आरतियाँ ।।

।। *आरती श्री नाथ निरन्जन की* ।।

नाथ निरन्जन आरती साजै।
गुरु के शब्द झालरी बाजै।। टेक।।
अनहद नाद गगन में गाजे।
परम ज्योति तहां आप विराजे।।१।।

दीपक ज्योति अखंडत् बाती।
परम ज्योति जगे दिन राति।।२।।
सकल भवन उजियारा होई।
देव निरन्जन और न कोई।।३।।
अनन्त कला जाकै पार न पावै।
शंख मृदंग धूनी बेनि बजावे।।४।।
स्वाति बूंद ले कलश बदाऊं।
निरति सुरति ले पहुप चढ़ाऊं।।५।।
निज तत नाव अमूरति मूरति।
सब देवां सिरी उद्बुद्धि सूरति।।६।।
आदिनाथ नाती मत्स्येन्द्रनाथ पूता।
आरती करे गोरख अवधूता।।७।।
नाथ निरन्जन आरती साजै।
गुरु के शबदू झालरी बाजै।। टेक।।

साखी

शीश निवावे क्या भया दया न हृदय भाव।
बधिक नीच दूना नवे करे मृग के घाव।।

।। प्रातः मंगल आरती ।।

आरती जग के रक्षक की सदा शिव बाले गोरक्ष की-२
श्रवण में कुण्डल है आला, ध्यान में बैठे हैं बाला।
बिछाकर बाघाम्बर छाला, सदाशिव रुप, धरा है अनूप
करोड़ों भूप, शरण में आये रक्षक की,
सदाशिव बाले गोरक्ष की।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की।।१।।
सुनहरी जटा शीश साजे, भाल पर अर्ध चन्द्र विराजे।
रुप लख जती पति ही लाजे, गेरुवा शाल,
त्रिपुंड है भाल, गले में माल सुशोभित है रुद्राक्ष
की सदाशिव बाले गोरक्ष की।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बोले गोरक्ष की।।२।।
अखंडित भस्म अंग सोहे, मधुर ध्वनी डमरु की होये।
देख छबि सुर नर मुनी मोहे, गले बिच नाद खड्गऊं
पाद देवही आज करत जय की जय योग के
शिक्षक की, सदाशिव बोले गोरक्ष की।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की।।३।।
पार्वती पार नहीं पायो, राम और कृष्ण सुयश गायो।
सकल सिद्धों के मन भायो योगी अवधूत अयो

निजपूत पंचमहाभूत करत जय के जय काल के भक्षक की-सदाशिव बाले गोरक्ष की।

आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की।।४।।

लिये है योग युक्ति झोली, लुटा रहे योगामृत खोली। शरण सब सिद्ध सन्त टोली, सिद्ध सिरताज भेष की लाज, राखियो आज, अरज है पारस भिक्षुक की, अरज है, पारस भिक्षुक की-सदाशिव बाले गोरक्ष की।

आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की।।५।।

।। गुरु गोरक्षनाथ आरती (प्रातः) ।।

जय देव, जय देव, जय गोरक्ष योगीऽऽ शिव गोरक्ष योगी दर्शन मात्र मनोकामना पूर्ति। जय देव जय देवऽऽ सुखकर्ता दुः खहर्ता तुम हो अंतर्यामी....तुम हो अंतर्यामीऽऽऽ

अखण्ड-अनन्त प्रेम कृपा हो तुम्हरी....प्रेम कृपा हो तुम्हरीऽऽऽ

सर्वांग सुन्दर कर्पूर कान्ति....कर्पूर कान्तिऽऽऽ

कण्ठी झलके माला नाद रुद्राक्ष की
जय देव, जय देव, जय गोरक्ष योगीऽऽ शिव गोरक्ष योगी
दर्शन मात्र मनोकामना पूर्ति....जय देव जय देवऽऽ।।१।।
चन्द्र-सूरज जैसे कुण्डल है काना.... कुण्डल है कानाऽऽऽ
चन्दन भस्मी तिलक लागे हो माथा.... लागे हो माथा ऽऽऽ
जटा जुटी में चन्द्र शोभत है न्यारा.... चन्द्र शोभत है न्यारा ऽऽऽ
झोली झण्डी खर्पर लेकर है हाती
जय देव, जय देव, जय गोरक्ष योगीऽऽ शिव गोरक्ष योगी
दर्शन मात्र मनोकामना पूर्ति.... जय देव जय देव ऽऽ।।२।।
बाघम्बर आसन अन्तरमुख ध्याना.... अन्तरमुख ध्याना ऽऽऽऽ
सहज योग त्रिनेत्र त्रिकाल ज्ञाना.. त्रिकाल ज्ञाना ऽऽऽऽ
नाथ योगीजन करेगे सेवा.... करेंगे सेवा ऽऽऽऽ
संकटी रक्षेगे सन्तोषी रखेंगे सुरमुनी वन्दना
जय देव, जय देव, जय गोरक्ष योगीऽऽ शिव गोरक्ष योगी
दर्शन मात्र मनोकामना पूर्ति.... जय देव जय देव ऽऽ।।३।।

।। श्री नाथ जी की मंगल आरती ।।

ॐ जय शिव गोरक्ष योगी (श्री गुरुजी) हर हर गोरक्ष योगी।

वेद पुराण बखानत, ब्रह्मादिक सुरमानत, अटल भवन भोगी।।

ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।१।।

बाल जती ब्रह्मज्ञानी योग युक्ति पूरी (श्री गुरुजी) योग युक्ति पूरे।

सोहं शब्द निरन्तर (अनहद नाद निरन्तर) बाज रहे तूरे।

ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।२।।

रत्नजड़ित मणि माणिक कुण्डल कानन में (श्री गुरुजी) कुंडल कानन में

जटा मुकुट सिर सोहत भस्मन्ती तन में।

ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।३।।

आदि पुरुष अविनाशी निर्गुण गुणराशी (श्री गुरुजी) निर्गुण गुणराशी

सुमिरण से अघ छूटे सुमिरन से पाप छूटे टूटे यम फाँसी।

ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।४।।

ध्यान किया दशरथ सुत रघुकुल वंशमणि
(श्री गुरुजी) रघुकुल वंशमणि
सीता शोक निवारक सीता मुक्त कराई मार्‌यो लंक धनी।
ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।५।।
नन्दनन्दन जगवन्दन गिरधर वनमाली (श्री गुरुजी) गिरधर वनमाली
निश वासर गुण गावत, वंशी मधुर बजावत, संग रुक्मणि बाली।
ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।६।।
धारा नगर मैनावती तुम्हरो ध्यान धरे (श्री गुरुजी) तुम्हरो ध्यान धरे
अमर किये गोपीचन्द अमर किये पूर्णमल संकट दूर करे।
ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।७।।
चन्द्रावल लखरावल निजकर घात मरी (श्री गुरुजी) निजकर घात मरी
योग अमर फल देकर क्षण में अमर करी।
ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।८।।
भूप अमित शरणागत सनकादिक ज्ञान (श्री गुरुजी)

सनकादिक ज्ञानी
मान दिलीप युधिष्ठर-२ हरिश्चन्द्र से दानी।
ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।९।।
वीर धीर संग ऋद्धि सिद्धि गणपति चंवर करे (श्री गुरुजी) गणपति चंवर करे
जगदम्बा जगजननी-२ योगिनी ध्यान धरे।
ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।१०।।
दया करी चौरंगी पर कठिन विपति टारी (श्री गुरुजी) कठिन विपति टारी
दीनदयाल दयानिधि-२ सेवक सुखकारी।
ॐ जय शिव गोरक्ष योगी.....।।११।।
इतनी श्री नाथ जी की मंगला आरती निशदिन जो गावे (श्री गुरुजी) प्रात समय गावे,
भणत विचार परम पद (भर्तृहरि भूप अमर पद) सो निश्चय पावे।
ॐ जय शिव गोरक्ष योगी
श्री गुरुजी हर हर गोरक्ष योगी.....।।१२।।

।। गुरु गोरक्षनाथ जी की आरती ।।

जय गोरक्ष देवा शिव जय गोरक्ष देवा।
करे कृपा मम ऊपर नित्य करूं सेवा।।१।।
शीश जटा अति सुन्दर भाल चन्द्र सोहे।
कानन कुण्डल झलकत निरखत मन मोहे।।२।।
गलविच सेली नाद सुशोभित तन भस्मी धारी
आदि पुरुष योगीश्वर सन्तन हितकारी।।३।।
नाथ निरंजन आप ही घट-घट के वासी।
करत कृपा निज जन पर मेटत यम फाँसी।।४।।
ऋद्धि सिद्धि चरणों में लोटत माया है दासी।
आप अलख अवधूता उत्तराखण्ड वासी।।५।।
अगम अगोचर अकथ अरुपी सबसे हो न्यारे।
योगीजन के आप ही सदा हो रखवारे।।६।।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हारा निशदिन गुण गावे।
नारद शारद सुर मिल चरनन चित्त लावे।।७।।
चारों युग में आप विराजत योगी तन धारी।
सतयुग द्वापर त्रेता कलयुग भय टारो।।८।।
गुरु गोरक्ष नाथ की आरती निशदिन जो गावे।
विनवत बाल त्रिलोकी मुक्ति फल पावे।।९।।

।। आरती गुरु गोरक्ष नाथ जी की ।।

जय देव जय देव जय गोरख नाथा।
आरती उतारु हम निरंजन नाथा।।

गोरक्ष गोरक्ष, रुप ॐकार नाथ।
त्रिगुणी अवतार, त्रैलोक्य नाथ।।
नेती नेती शब्द, ॐकार नाद।
ज्ञान ध्यानी तप करते तो देते है साद।।

जय देव, जय देव .....।।१।।

शिव शक्ति रुपी तुम, सुख दुः ख भंजन।
जती सती रुपी तुम अलख निरंजन।।
सर्व साधु संतों में, तुम चैत्यन्य नाथ।
टारे मारे संकट में, देते हो साथ।।

जय देव, जय देव .....।।२।।

गोरक्ष गोरक्ष मन, ध्यान सुन्दर।
भयी निर्मल काया, निज आत्मा अन्दर।।
हर ली चिन्ता भय, भव सागर पार।
जन्म मृत्यु टले, चौरासी का फेर।।

जय देव, जय देव .....।।३।।

भये प्रगट गोरक्ष, असंख्य युगी।
दिव्य अवतार, शिव गोरक्ष योगी।।
जती गोरक्षनाथ आये, परब्रह्म रुप।

योग चमत्कार मिटे, सब मायावी भ्रम।।
जय देव, जय देव .....।।४।।
गले रुद्र माल, मस्तक त्रिपुण्ड भस्मी।
कटी बाघाम्बर चिमटा, खप्पर ही हाती।।
भैरव हनुमन्त, सदा सन्मुख रक्षति।
नव दुर्गा जोगन, शक्ति करते है भक्ति।।
जय देव, जय देव .....।।५।।
नित्य नित्य ध्यान, सुर नर मुनि करती।
नाथ सिद्ध दर्शन, मेला करे हो भक्ति।।
देखो-देखो सिद्धो, गुरु गोरखनाथजी आये।
अनन्त कोट सिद्ध, जय जयकार करे।।
नाथ विलास कहे, भजो शिव गोरख योगी।
गुरु शिष्य परमात्मन, मिल आनन्द भोगी।।
जय देव जय देव, जय गोरक्षनाथा।
आरती उतारे हम, निरंजन नाथा।।६।।

।। आरती गुरु जय गोरक्षनाथा ।।

ॐ जय गोरक्षनाथा गुरु जय गोरक्षनाथा।
भरम मिटावे मनका- , टेक चरण माथा।।
ॐ जय गोरक्षनाथा गुरु जय गोरक्षनाथा।।१।।

जय गोरख योगी अब आरती में गाऊ।
तन, मन, धन सब हि सेवा में लाऊ।।
ॐ जय गोरक्ष नाथा.....।।२।।
रुप तुम्हारा जती सती अलख निरंजन मूर्ति।
दर्शन को चले आते सुन सुन कर कीर्ति।।
ॐ जय गोरक्ष नाथा.....।।३।।
भगवा बाना कर्पुरकाया, नित आनन्द दायी।
ध्यान ज्ञान में आसन, ऋषि मुनी जन मोही।।
ॐ जय गोरक्ष नाथा.....।।४।।
घट पट में समाये चैतन्य आत्म ज्योति।
सगुण-निर्गुन स्वरुपी, शून्य तत्व भाती।।
ॐ जय गोरक्ष नाथा.....।।५।।
कृपा करो अब नाथ स्वामी अब शरण तुम्हरे दास।
लख चौरासी मिटाओ, तोडो कलुकालका फास।।
ॐ जय गोरक्ष नाथा.....।।६।।
रोम रोम में आप समावे मन, मन में जो आस।
दर्शन अब तो दिजे आस करे नाथ विलास।।
ॐ जय गोरखनाथा गुरु जय गोरक्षनाथा।
भरम मिटाये मन का टेक चरण माथा।।७।।
ॐ जय जय गोरखनाथा....

।। जब गायी आरती पूरणनाथ जी ने ।।

पूरन गुरु की आरती गावे गुरु गुरु गोरख का ध्यान लगावे।

सतगुरु बुद्धि दीजे तत्काला भरम जाय घट होय उजाला।।

पूरन गुरु की आरती गावे काल डन्ड कभी नहि आवे।

काल डन्ड से सतगुरु न्यारा सो सतगुरु भगतन को प्यारा।।

धीरज दिया सूरती की बानी ज्ञान तेल जले दिन राती।

मन चित एक सूरत में लावे उलटी कला सतगुरु की पावे।।

गुरु गोरख की आरती गाई सन्त की चरण पाप कट जाई।।

नोट :– पूरणमल को ही पूरणनाथ जी तथा चौरंगीनाथ जी कहते हैं। जो नवनाथ सिद्धों में से एक है।

साखी

कहै गोरख सुन चेला सन्त चरन सिर टेक।
जैसे सन्तन में सुनी है तब मूल बताया येक।।

।। जब गायी आरती चरपट (चर्पटी) नाथजी ने ।।

चरपट नाथ आरती गावे गुरु गोरख को शीश नवावे।
चरपट नाथ कहे गुरु धीरा आप खेवाईया है भव सागर तीरा।।
भव में अटकी नाव हमारी कीजे सतगुरु बेड़ा पारी।
बेड़ा पार लगावो देवा आठ पहर करहौ गुरु सेवा।।
गुरु गोरख आतम प्रकाशी चरपट नाथ अमर पूर बासी।
चरपट नाथ कहे गुरु बानी घट अन्दर सतगुरु पहिचानी।।
चरपट नाथ गुरु गुन गावा अपने गुरु का ध्यान लगावा।
चरपट नाथ देर नहि कीन्हा काम क्रोध को माटी चीन्हा।।
चरपट नाथ दैत सिर काटी एक धर्म की पकड़ी पाटी।
गोरख के चटपट गुन गाया फिर जन्म जग में नहीं पाया।।

नोट :– श्री सिद्ध चर्पट नाथ जी ८४ सिद्धों में से एक सिद्ध है।

।। श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की संध्या आरती ।।

ॐ गुरुजी शिव जय जय गोरक्ष देवा श्री अवधू हर हर गोरक्ष देवा।
सुर नर मुनि जन ध्यावत सुर नर मुनि जन सेवत।
सिद्ध करै सब सेवा श्री अवधू संत करैं सब सेवा।
शिव जय जय गोरक्ष देवा.....।।१।।
ॐ गुरु जी योग युगति कर जानत मानत ब्रह्म ज्ञानी।
श्री अवधू मानत सर्व ज्ञानी।
सिद्ध शिरोमणि राजत संत शिरोमणि साजत।
गोरक्ष गुण ज्ञानी श्री अवधू सर्व ज्ञानी।
शिव जय जय गोरक्ष देवा.....।।२।।
ॐ गुरुजी ज्ञान ध्यान के धारी गुरु सब के हो हितकारी।
श्री अवधू सब के हो सुखकारी।
गो इन्द्रियों के रक्षक सर्व इन्द्रियों के पालक।
राखत सुध सारी श्री अवधू राखत सुध सारी।
शिव जय जय गोरक्ष देवा.....।।३।।
ॐ गुरुजी रमते श्रीराम सकल युग माही छाया है नाहीं।

श्री अवधू माया है नाहीं।
घट घट के गोरक्ष व्यापै सर्व घट श्री नाथ जी विराजत।
सो लक्ष मन मांही श्री अवधू सो लक्ष दिल मांही।
शिव जय जय गोरक्ष देवा.....।।४।।
ॐ गुरुजी भस्मी गुरु लसत सरजनी है अंगे।
श्री अवधू जननी है संगे।
वेद उच्चारे सो जानत योग विचारे सो मानत।
योगी गुरु बहुरंगा श्री अवधू बाले गारेक्ष सर्व संगा।
शिव जय जय गोरक्ष देवा.....।।५।।
ॐ गुरुजी कंठ विराजत सेली और शृंगी जत मत सुख बेली।
श्री अवधू जत सत सुख बेली।
भगवा कंथा सोहत-गेरुवा अंचला सोहत ज्ञान रतन थैली
श्री अवधू योग युगति झोली।
शिव जय जय गोरक्ष देवा.....।।६।।
ॐ गुरुजी कानों में कुण्डल राजत साजत रवि चन्द्रमा।

श्री अवधू सोहत मस्तक चन्द्रमा।
बाजत शृंगी नादा-गुरु बाजत अनहद नादा-गुरु
भाजत दुः ख द्वन्दा
श्री अवधू नाशत सर्व संशया
शिव जय जय गोरक्ष देवा.....।।७।।
ॐ गुरुजी निद्रा मारो गुरु काल संहारो-संकट के हो बैरी
श्री अवधू दुष्टन के हो बैरी
करो कृपा सन्तन पर-गुरु दया पालो भक्तन पर शरणागत तुम्हारी
शिव जय जय गोरक्ष देवा.....।।८।।
ॐ गुरु जी इतनी श्री नाथ जी की सन्ध्या आरती
निश दिन जो गावे-श्री अवधू सर्व दिन रट गावे
वर्णी राजा रामचन्द्र स्वामी गुरु जपे राजा रामचन्द्र योगी
मनवांछित फल पावे श्री अवधू सुख सम्पत्ति फल पावे।
शिव जय जय गोरक्ष देवा.....।।९।।

।। आरती गुरु गोरक्षनाथजी की (संध्या) ।।

गुरु हमारे गोरक्षनाथ सदगुरु कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।
मृगछाला, बाघाम्बर आसन दिया बिछाय।
चन्द्र सूरज कानन कुण्डल, तारे तेज समान।।
भस्मी रमाये जटा जमाये, मस्तक चन्द्रभान।
नाद जनेऊ त्रिशूल डमरू सांभ शिव अवतार।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।१।।
तिन लोचन त्रिपुण्ड भस्म तिलक करे हनुमान।
धूनी चेताये धूनी रमाये निरंजन निराकार।।
चिमटा खप्पर हाथ लियो सद्गुरुजी का ध्यान।
त्रिलोक की अलख जतावे ऋद्धि सिद्धि भण्डार।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।२।।
रक्त रूप में भगवा बाना, शक्ति उमा की भेंट।
अवधू जोगी त्याग बैरागी झोली भगवा भेष।
अन्नपूर्णा भोग लगावे सुख सन्तोष की सेज।
रोट लंगोटी भेंट चढ़ावे, भैरव करी आदेश।।

गुरु हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।३।।
ब्रह्मा विष्णु करे आरती, शिव गोरख का मान।
नारद इन्द्र चँवर घुमायें सुरनर करी गुणगान।।
जय सद्गुरु जय कृपालु, ज्योति स्वरूप का ध्यान।
जय प्रतिपाली जय अविनाशी झलके ब्रह्मज्ञान।।
गुरु हमारे गोरक्षनात सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।४।।
वेद पुराण ना गाये महिमा, विरला जाने वीर।
अलख निरंजन नाम लेते लख चौरासी में जीत।।
सिद्ध चौरासी और नवनाथ, सब सन्तन में प्रीत।
घट-घट समाये कण-कण रमाये अटल योग की रीत।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।५।।
शिष्य भर्तृहरि और गोपीचंद, का पद अजर अमर।
आधि व्याधि सभी मिटाई पूरनमल भय अमर।।
ऋषि मुनियों को योग दिया राम कृष्ण हनुमंत।
ज्वाला काली और दुर्गा जी, सब शक्ति करी नमन।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश निमाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।६।।

हठ हठीले श्री गोरक्षनाथ, चार युगों का जोग।
नाद, बिन्द की गाँठ है, श्री नाथ निरंजन योग।।
बैठ बैठले नाम रटिले, परमानन्द का भोग।
अपने आपे आप में, पालो परम सन्तोष।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।७।।
भूत प्रेत कलु कालका, सदगुरु करो विनाश।
सुख दुः ख से सब पार कर दो मोक्ष मुक्ति के धाम।
भक्ति पूजा शुभ आरती, करो आप स्वीकार।
जन्म जन्म के दास पर, कृपा करो भगवान।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।८।।
निशदिन जो करे आरती मनवांछित फल पाये।
सुख सम्पति लाभ से जीवन सफल बनाये।।
नमन करूँ सब भक्तन को विनती करो स्वीकार।
यो वन्दन विलासनाथ गुरु आनंद का दास।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूँ मैं शीश नवाऊँ कृपा सिन्धु भगवान।।९।।

।। आरती श्री पात्र देवता की ।।

(**विषय**– यह आरती हरिद्वार, नासिक तथा उज्जैन इन स्थानों में कुम्भ पर्व के अवसर पर पात्र देवता की स्थापना होने पर सुबह–शाम सब नाथ सिद्ध चक्री लगाते हुये आरती करते हैं।)

आरती पात्र देवता की। नाथ निरन्जन बाले गोरक्ष की।।

घट पट में नाद श्रृंगी सैली। मधुर धूनी अनहद की बानी। केशर राज तिलक सोही। मुख ले ब्रह्म, गले विच विष्णु, पात्र लिंग है-शिव शक्ति की। नाथ निरंजन बाले गोरक्ष की। आरती पात्रदेवता की.....।।१।।

गलेन में नाद जनेऊ पहरि। कुण्डल चंद्र सूरज भाखी। अलाबु पात्र चदर सोही। श्रृंगी सिर ताज, पात्र सिद्ध राज, पीर जी ऽऽ पात्र छत्र साजी। नाथ निरंजन बाले गोरक्ष की। आरती पात्र देवता की.....।।२।।

पात्रदेव परशुराम को दीन्हा। सेवा ऋद्धि सिद्धि बहु कीन्हा। देख नाथ सिद्धां को दीन्हा। नाथ कुल पात्र, नाथ घरा छत्र, पात्र देवरुप है गोरक्ष की। नाथ निरंजन बाले गोरक्ष की। आरती पात्रदेवता की.....।।३।।

चले सुमिर पात्र देवयात्रा। समुन्दर सन्मुख थल दीन्हा। देवता पुष्प वृष्टि कीन्हा। यक्ष किन्नर, योगी नर नार, नगर तीरथराज, करत जय की जय पात्र देवता की। नाथ निरंजन बाले गोरक्ष की, आरती पात्रदेवता की.....।।४।।

युगा युग पात्र सिद्ध योगी। योग है सिद्ध रमै योगी। अनुभव आत्मनंद भोगी। नाथ बिन्दु पात्र, योग शक्ति छत्र पात्रदेव है मोक्ष मुक्ति की। नाथ निरंजन बाले गोरक्ष की। आरती पात्रदेवता की.....।।५।।

पात्र चित्त शुद्धि कीन्हा। पात्रदेव अमिरस दीन्हा। सिद्धों अमर पद लीन्हा। पात्र छत्र राज, भेष का मान, राखीयो आज, जय की जय पात्र भगवन की। नाथ निरंजन बाले गोरक्ष की आरती पात्र देवता की.....।।६।।

नोटः– पात्र देवता अर्थात् श्री नाथ सिद्धों का बाना अर्थात् गुरु गोरक्षनाथजी का स्वरूप मानते है।

साखी

धूमत धामत दिन गया सोचत हो गई साम।
एक हरी के नाम बिना मिले ना गुरु धाम।।
गुरु हमारे आत्मा हम जीवन के जीव।
सन्तन में अस मिल रहे जस माखन से घीव।।

प्रार्थना ॐ शिव गोरक्ष योगी (पारम्पारीक)

गंगे हर-नर्मदे हर, जटाशकरी हर ॐ नमो पार्वती पतये हरे,बोलिये श्री शम्भू जती गुरु गोरक्षनाथ महाराज की जय,

माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्र नाथजी महाराज की जय, श्री नवनाथ चौरासी सिद्धों की जय, श्री भेष भगवान की जय, श्री अटल क्षेत्र की जय, रमतेश्वर महाराज की जय, श्री कदली काल भैरवनाथ जी की जय, श्री पात्र देवता भगवान की जय, श्री ज्वाला महामाई की जय, श्री सनातन धर्म की जय, अपने-अपने गुरु महाराज की जय, गौ-ब्राह्मण की जय, बोल साचे दरबार की जय, हर हर महादेव की जय

कर्पूरगौरम् करुणावतारम्
संसारसारम् भुजगेन्द्र हारम्
सदा वसन्तम् हृदयार विन्दे
भवंभवानी सेहितम् नमामी
मन्दारमाला कलिनाल कायै
कपालमालांटित कन्थराय
नमः शिवायै च नमः शिवाय

गोरक्ष बालम् गुरु शिष्य पालम्
शेषां हिमालम् शशिखण्ड भालम्
कालस्य कालम जिनजन्म जालम्
वन्दे जटालम जगदब्जनालम्
आकाशाय ताडका लिंगम
पाताले वटुकेश्वरम्
मृत्यु लोके महाकालम
सर्व लिंगम नमोस्तुते
शेली शृंगी शिर जटा झोली भगवा भेष
कानन कुण्डल भस्म लसै, शिव गोरक्ष आदेश

ॐ कार तेरा आधार
तीन लोक में जय-जयकार
नाद बाजे काल भागे,
ज्ञान की टोपी, गोरख साजे
गले नाद, पुष्पन की माला
रक्षा करें, श्री शम्भुजति गुरु
गोरक्षनाथ जी बाला।

चार खाणी चार बानी।
चन्द्र सूर्य पवन पानी
एको देवा सर्वत्र सेवा
ज्योति पाटले परसो देवा
कानन कुण्डल गले नाद
करो सिद्धो नाद् ॐ कार
सिद्धों गुरोवरों को आदेश! आदेश!!

✸ श्री गोरक्षनाथ जी की प्रार्थना ✸

गोरक्षं गोरक्षं गोरक्षं आत्मानन्द।। गोरक्षं गोरक्षं नाथ कुल भूषणा।।१।।

गोरक्षं गोरक्षं शिव स्वरूपा, गोरक्षं गोरक्षं मीन सूता।।२।।

गोरक्षं गोरक्षं दीनवत्सला गोरक्षं गोरक्षं, भक्तवत्सला।।३।।

गोरक्षं गोरक्षं गोरक्षं गोरक्षनाथा। तार तार तार भवसागरा तार नाथा।।४।।

गोरक्षं गोरक्षं काटो काटो काटो भव पाशा गोरक्षं गोरक्षं काटो जन्ममृत्यु यम फाशा।।५।।

गोरक्षं गोरक्षं अनन्य शरणं, शरणं शरणं च नाथ गोरक्षं ।।६।।

नाथ विलासं शरणं शरणं गच्छामि, शरणं शरणं तम् गोरक्ष जती ।।७।।

नमो आदेश। नमो आदेश।। नमो आदेश नमो नमः ।।।

✱ श्री गोरखनाथ जी की स्तुति ✱

ॐ जय गोरख स्वामी अन्तर्यामी, दीनन के हितकारी
मद मोह विनाशी शिव अविनाशी, काम क्रोध द्वै जारी।
यतियों के नायक सिद्ध सहायक, योग युक्ति अधिकारी,
दीजे आशीशा गोरख ईशा, हम हैं शरण तुम्हारी।।१।।
तन भस्मी भूषित कुण्डल शोभित, शीश जटा शुभकारी,
शुभ चन्द्र सुहावै छबि मन भावै, काल दण्ड कर धारी।
गुरु गोरख ज्ञानी शिव कल्यानी, बाल रूप ब्रह्मचारी,
दीजै अशीशा गोरख ईशा, हम हैं शरण तुम्हारी।।२।।
शुभ सतयुग त्रेता कृपा निकेता, करते योग प्रचारी,
द्वापर युग आये कृष्णा मन भाये, योग युक्ति सहकारी।
सन्त सहाई अति सुख दाई, कलियुग के भयहारी,
दीजे आशीशा गोरख ईशा हम हैं शरण तुम्हारी।।३।।

माया है दासी गिरि गुह वासी, कठिन तपस्या प्यारी,
जो शरण तुम्हारे भये सुखारे, हुये अमर पद धारी।
कौटि भक्त उद्धारे विपत विदारे, कहते ग्रन्थ पुकारी,
दीजै आशीशा गोरख ईशा, हम हैं शरण तुम्हारी।।४।।
करिये गुरु दाया हरिये माया नाथ त्रिलोक अधारी,
काटो यम फांसी मिटे चौरासी, क्रोध लोभ देव हारी।
यह स्तुति गावै सर्व सुख पाचै, शीघ्र मिलत फल चारी,
दीजै आशीशा गोरख ईशा, हम हैं शरण तुम्हारी।।५।।

★ सबद ★

मैं गरीब अति दीन हूँ सुनिये गोरख आन
अवगुण मेरे बख्श के देहो भक्ती बरदान
पंडित मुनि जन देवता धरे तुम्हारा ध्यान।
मुझ पर कृपा तुम करो शरण पड़ा हूँ आन।
श्रद्धा भक्ती प्रेम से धरा गुरु का ध्यान।
यहां भजन श्री नाथ जी का इच्छा के फल जान।

✱ श्री गोरक्षनाथ जी की स्तुति ✱

शैली शिंगी सिर जटा झोली भगवा भेष।
कानन कुन्डल भस्म लसे शिव गोरख आदेश।।
ॐ नमो आदेश-आदेश
करो न शंका काल की जरा ना मानुहार।
गुरु गोरख सनमुख खड़े काल सके ना मार।।
गुरु का नाम धराय के रहुं दृढ़ गम्भीर।
माया जगत खड़ा हूँ जा भवसागर तीर।।
सुर भगत भक्ती करे नही मूरख का काम।
अन्तरात्मा उतरा पड़ा जब लेव गुरु का नाम।।
लोहा लेके जो लड़े सेा ना कहिये सूर।
जल परखे भक्ती करे शोक हिये गुर वीर।।
ज्यों ज्यों गुरु का नाम ले त्यों त्यों लागा तीर।
तीर ज्ञान सम्मुख सहै सो होजा ज्ञान गम्भीर।।
गोरख मेरा सूरमा ज्ञान दिया भरपूर।
बाहर कुछ सूझे नहीं भीतर माही सूर।।
कड़वा ज्ञान गोरख का तुरते देवे जवाब।
ज्ञान हो तो सुने न तो मूरख उठके भाग।।

और ज्ञान सब ज्ञान गोरख ज्ञान से ज्ञान।
जैसे गोला तोप का करता चले मैदान।।
होनी को समझे नहीं बहुत करे उत्पात।
भेड़ा हाथी से लड़े कैसी उलटी रीत।।
रन भूमि गोरख खड़ा फौज ज्ञान ले साथ।
मारा जम के फौज में दम को लीन्हा साथ।।
लोक तीन ब्रह्मान्ड में गोरख जोग आधार।
करनी का तेगा चल रहा जम नही पावे पार।।

साखी

मन के बारा पन्थ है मन के सकल पसार।
जो मन को वश में करे सो पावे संसार।।
भेदी गुन को जानता अन भेदी क्या जान।
मुरचा लगा लोह में कस छूटे बिन सान।।
सकल पन्थ गुरु पन्थ एक है दूजा सब संसार।
गुड़ गन्ना और देख ले बने मिठाई सार।।
अगम पन्थ मन धीर करे बुद्धि होये हुशियार।
तब पहुंचे उस देश को गोरख कहे विचार।।

श्री नवनाथ एवं चौरासी सिद्ध (आरतियाँ)

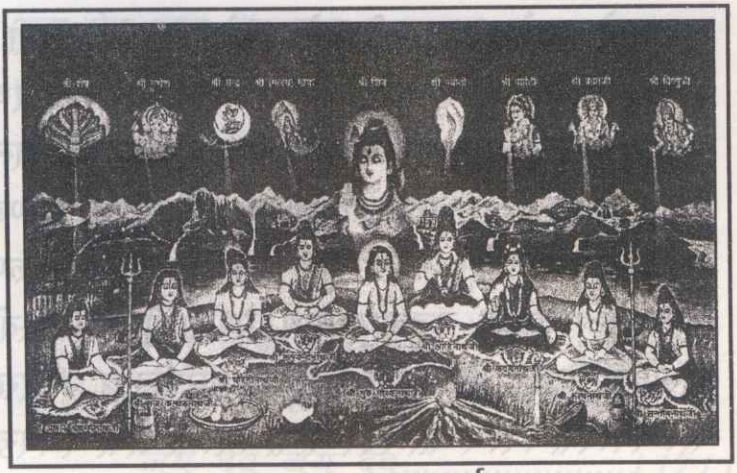

नवनाथ स्वरूप दर्शन

(**विषय**– यह आरतियाँ, स्तुति, प्रार्थना एवं भजन नवनाथ या श्री गोरक्षनाथ एवं ८४ सिद्धों के मंदिर, मठ, धूना, मकानों में गाये जाते है। तथा नवनाथ कथा, गोरक्षकथा इत्यादि नाथ सिद्धों की पूजा पाठ विधियों के उपरांत बड़े ही भक्ति रस में यह गाये जाते हैं।)

निवेदन :– यहां श्री नवनाथों की स्थापना या उनका यन्त्र या कलश या ९ ज्योत की स्थापना करके उनकी यथा श्रद्धा पूजन करे और निम्न नवनाथ नाम स्वरूप जाप का ९ या १८ या २७ बार पाठ करे। तद्उपरान्त नवनाथों की आरती तथा भजन गा सकते है।

फल :– शरीर स्वास्थ ठीक होगा, विघ्न टलेगे तथा कीर्ति, धन लाभ होगा, नव विधा भक्ति का लाभ होगा।

।। श्री नवनाथ नाम स्वरुप जाप।।

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐकार आदिनाथ ॐकार स्वरुप बोलिये। उदयनाथ पार्वती धरती स्वरुप बोलिये। सत्यनाथ ब्रह्मा जी जल स्वरुप बोलिये। सन्तोषनाथ विष्णु जी खण्ड-खाण्ड तेज स्वरुप बोलिये। अचल अचम्भेनाथ आकाश स्वरुप बोलिये। गजबेली गजकंथडनाथ गणेशजी गज हस्ती स्वरुप बोलिये। ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ अठारह भार वनस्पती स्वरुप बोलिये। माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी माया स्वरुप बोलिये। घटे पिण्डे नव निरन्तर-रक्षा करन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाल स्वरुप बोलिये। इता नवनाथ नाथ जाप सम्पूर्ण भया श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

साखी

काम क्रोध की कौठरी कैद पड़ा संसार।
कुंजी गोरख नाथ पे खोले जम का दुआर।।
जग की माया डंकनी सब जग खाये पड़ी।
गोरख के सन्मुख चली भई भाग के खड़ी।।

।। आरती नवनाथों की ।।

जय देव जय देव जय नवनाथ।
करो मम उद्धार चरनी टेकु माथ।।
मत्स्येन्द्र गोरक्ष ॐकार आदिनाथ।
उदय गजबेली, गज कन्थड़ नाथ।।
सत्यनाथ सन्तोष श्री चौरंगी नाथ।
अचल अचम्भे सह श्री नव हि नाथ।।
आरती उतारू अलख निरंजन नाथ।
जय देव जय देव.....।।१।।
भक्ति शक्ति-भाव, त्याग वैराग्य सहित।
टारे-मारे संकटो में देते हैं साथ।।
आदेश नमन जो शरण में हि जात।
दुष्ट दुर्जन का ही करते है अन्त।।
ऐसे नवनाथ अमर आदि और अन्त।
जय देव जय देव.....।।२।।
इहपर अवतारी श्री नव ही नाथ।
तंत्र मंत्र शाबर सिद्धि के ही साथ।।
भूत प्रेत-पिशाच होगे भस्म भूत।

भक्त जनों के पुरीजे संकल्प त्वरीत।।
भये भये दर्शण भयी कृपा अनन्त।
जय देव जय देव.....।।३।।
दिन दरिद्र दुः खियों को आप ही तारो।
सुख सम्पति देकर शुभ लाभ ही करो।।
माया संसारी श्री नवनाथ आधार।
भक्ति भाव से हो भवसागर पार।।
नव निध नव विध से नव नाथ पावो।
जय देव जय देव.....।।४।।
सत्य सनातन नाथ पंथ अपार।
शरणागत पर करो कृपा उद्धार।।
योग ध्यान करे हमे करो संज्ञान।
नित्य भजे सब साधु सन्त जन।।
नाथ विलास कहे नमो नवनाथ जय।
जग नाथमय श्री नाथ जगमय।।
जय देव जय देव जय नवनाथ।
करो मम उद्धार चरनी टेकु माथ।।५।।

।। आरती श्री नवनाथ दर्शन ।।

जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता।। टेक।।
ॐ कार आदिनाथ ॐ कार स्वरूपा.... ॐ कार स्वरूपा ऽऽऽ
आदि अनादि सद्गुरु कहते हो सन्ता.....कहते हो सन्ता ऽऽऽ
नाथ लिये अवतार, नवनाथ सिद्धा..... नवनाथ सिद्धां ऽऽऽ
भक्ति से प्रसन्न, शक्ति से प्रसन्न जगजन उद्धारा ऽऽऽ
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता।।१।।
उदयनाथ पार्वती धर्ती माँ स्वरूपा..... धर्ती माँ स्वरूपा
शक्ति माया संग अनंत रूपा..... अनंत रूपा ऽऽऽ
भया ज्ञानोदय जग उद्धारा..... जग उद्धारा ऽऽऽ
दया ही करोगी क्षमा ही करोगी असुरी दल मारा.....
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता ।।२।।

सत्यनाथ ब्रह्मा जी जल रूप स्वरूपा.....जल रूप स्वरूपा ऽऽऽ

ब्रह्मलोक बैठे, बहे ज्ञान की गंगा..... बहे ज्ञान की गंगा ऽऽऽ

चारों वेद शास्त्र गायत्री महिमा..... गायत्री महिमा ऽऽऽ

कमलासन बैठले, सृष्टि को उपाले सुरमुनि वन्दना

जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा

आरती करता हर ली भव चिन्ता।।३।।

विष्णु जी अवतार सन्तोष नाथा..... सन्तोष नाथा ऽऽऽ

वैकुण्ठ वैभव राज योग की माया..... राज योग की मायाऽऽऽ

रामकृष्ण अवतार नाथ योग ही पाया.....नाथ योग ही पाया ऽऽऽ

शस्त्र को उठाये, दुष्ट को मुष्ठाये निज भक्त रक्षाया

जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा

आरती करता हर ली भव चिन्ता।।४।।

अचल अचम्भे शेष वायु ही स्वरूपा..... शेष वायु

ही स्वरूपा ऽऽऽ
शीश सृष्टि का भार शक्ति अनन्ता.....भार शक्ति अनन्ता ऽऽऽ
कण्ठी हारमुक्ता रमे शम्भु के संगा..... रमे शम्भु के संगा ऽऽऽ
पाताल बैठले गगन उड़ाले कुंडलिनी योगा.....
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता।।५।।
देखो सिद्धों अवतार गणेशनाथा..... गणेश नाथा ऽऽऽ
गजबेली हस्ती गज कन्थड़नाथा..... कन्थड़नाथा ऽऽऽ
सुमंगल मांगल्य संकटी नाशा..... संकटी नाशा ऽऽऽ
ऋद्धि ही पायेगे, सिद्धि भी पायेगे मूलचक्र के वासा
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता।।६।।
ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथा..... सिद्ध चौरंगीनाथा ऽऽऽ

चन्द्र अवतार सोलह सिंगार रूपा..... सोलह सिंगार रूपाऽऽऽ
भया पूर्णांग नाथ मत्स्येन्द्र कृपा..... नाथ मत्स्येन्द्र कृपा ऽऽऽ
अजर रहेंगे अमर रहेंगे धन्य धन्य हो सन्ता
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता।।७।।
मत्स्य माया स्वरूपी मत्स्येन्द्रनाथा..... मत्स्येन्द्रनाथा ऽऽऽ
महाज्ञान मत्स्य गर्भ में ही पाया..... मत्स्य गर्भ में ही पाया ऽऽऽ
योगमाया का खेल न्यारा ही न्यारा..... खेल न्यारा ही न्यारा ऽऽऽ
ब्रह्म को पायेगे माया से खेलेंगे जन मन रंजना
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता।।८।।
गोरक्ष गोरक्ष शिव ज्योति के स्वरूपा.... शिव ज्योति स्वरूपा ऽऽऽ
महायोगी महाज्ञानी तुम मत्स्येन्द्र पुता..... तुम मत्स्येन्द्र पुता ऽऽऽ

अनन्त अमर तुम घट घट में वासा..... तुम घट घट में वासा ऽऽऽ
मुक्ति को पायेंगे मोक्ष को पायेंगे सुरनर मुनि वन्दना
जय देव जय देव जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता।।९।।
ऐसे नवनाथ प्रगटे युगो ही युगा.....प्रगटे युगो ही युगा ऽऽऽ
योग चमत्कारे सारी सृष्टि को तारा....सारी सृष्टि को तारा ऽऽऽ
नाथ विलास गाये सद्गुरु जी कृपा..... सद्गुरु जी कृपा ऽऽऽ
भक्ति में रमाये भक्ति में समाये नवनाथों के स्वरूपा.....
जय देव जय देव जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता।।१०।।

साखी

जोगी जंगम सेवड़ा सन्यासी दरवेश।
बिना प्रेम का बैरागी मिले न गुरु का देश।।

।। श्री नवनाथनाम-कवित्त्व ।।

आदिनाथ महेश आकाश रूप छाये रहे,
उदयनाथ पार्वती पृथ्वी रूप भाये हैं।
सत्यनाथ ब्रह्मा जी जिनका है जल रूप,
उन्हीं ने तो कृपा कर सृष्टि को रचाये हैं।
सन्तोषनाथ विष्णु तेज खाण्डा खड़ग रूप,
राजपाट अधिकारी वही तो कहाये हैं।
अचल अचम्भेनाथ जिनका है शेष रूप,
पृथ्वी का भार सब शीश पर उठाये हैं।
गजबेली गजकंथड़नाथ ऋद्धि सिद्धि देनहार,
हस्ति रूप धार गणपति कहलाये हैं।
ज्ञानपारखी चन्द्रमा सिद्ध है चौरंगीनाथ,
अठारह भार बनस्पति में वोही समाये हैं।
मायापति दादा गुरु कृपालु मत्स्येन्द्रनाथ,
सब ही का अन्न धन कपड़ा पुराये हैं।
गुरु तो गोरक्षनाथ स्वयं ज्योति स्वरूप जो,
विश्वम्भर योगशक्ति उदार फैलाये हैं।
बड़े हैं वे भाग्यवन्त जिन योग प्राप्त किया,

नवनाथ नवनाथ गुरु गुण गाये हैं।
नाथ ये त्रिलोक नवनाथ को नमन करे,
नवनाथ नाम शुभ मेरे मन भाये हैं।
दोहा -श्री नवनाथ को बिनऊं, दीजिये शुभ आशीष।
आप ही मम सर्वस्व है, आप ही है मम ईश।।
करें कृपा मुझ दीन पर, करूं सुयश गुणगान।
नवनाथ माला शुभ रचूं, कीजिये बुद्धि प्रदान।।
जिसके पठन श्रवण से, मिटे त्रिविध भवताप।
अचल मोक्षपद पावहीं, जपि हैं जो नित आप।।

।। श्री नवनाथ-स्वरूप ।।

आदिनाथ सदाशिव हैं जिनका आकाश रूप,
उदयनाथ पार्वती पृथ्वी रूप जानिये।
सत्यनाथ ब्रह्माजी जिनका जल स्वरूप,
विष्णु सन्तोषनाथ तेजरूप मानिये।
अचल हैं अचम्भेनाथ जिनका है शेष रूप,
गजबेली गजकन्थड़नाथ हस्तिरूप जानिये।

ज्ञानपारखी जो सिद्ध है वो चौरंगीनाथ,
अठारह भार वनस्पति चन्द्ररूप मानिये।
दादा श्री मत्स्येन्द्रनाथ जिनका है माया रूप,
गुरु श्री गोरक्षनाथ ज्योतिरूप जानिये।
बाल ये त्रिलोक नवनाथ का नमन करे,
नाथजी यह बाल को अपना ही मानिये।

★ ''तूहि तुम नवनाथ'' (प्रार्थना) ★

ॐ असतो मा सद्गमयं तमसो मा
ज्योतिर्गमय।।
मृत्योमोऽमृतगमय।
ॐ तत् सत श्री आदिनाथाय तूहि तुम।
आदि षुरुषोत्तम गुरु तूहि तुम।।
उदयनाथ ईश शक्ति पार्वती तूहि तुम।
सत्यनाथ ब्रह्मानन्द तूहि तुम।।
सन्तोषनाथ विष्णु जी तूहि तुम।
अचल अचम्भे शेष भगवान तूहि तुम।।

गजबेली गजकन्थड़ तूहि तुम।
सिद्धि बुद्धि नाथ विनायक तूहि तुम।।
सिद्ध चौरंगी चन्द्र अवतार तूहि तुम।
नाथ पंथ दादागुरु मत्स्येन्द्र तूहि तुम।।
विश्वरूपा ज्योति रूपा तूहि तुम।
सच्चिदानंद गोरक्षनाथ तूहि तुम।।
जती सतीः अलख निरंजन तूहि तुम।
सत गुरु गोरक्षनाथ तूहि तुम।।
अद्वितीय चैत्यन्यमय तूहि तुम।
अकाल आत्मलिंग शिव शम्भो तूहि तुम।
सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश।।
ॐ गुरुजी तूही तुम।।।

साखी

कहै पूरन गुरु देव जी कैसे उतपती संसार।
सो मोहे भेद बताईये मिले ज्ञान अधिकार।।
कहै गोरख सून पूरण, शून्य से उत्पत्ति यह संसार।
भेद नाद बीन्द का शून में ही लय संसार।।

।। श्री नाथ योगी चौरासी सिद्ध ।।

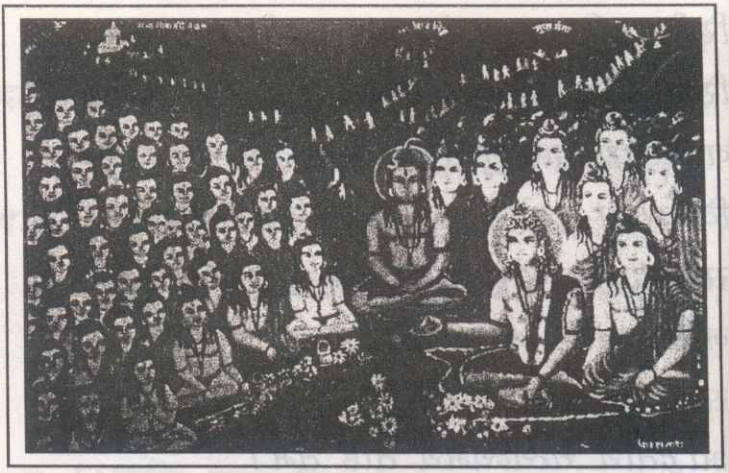

चौरासी सिद्ध

निवेदन :– नवनाथ ८४ सिद्धों का यन्त्र या उनके नाम से कलश स्थापन करके धूप, दीप, नैवेद्य इत्यादि पंचोपचारे पूजन करके निम्न चौरासी सिद्ध गायत्री मन्त्र का ११ या २१ बार पाठ या ८४ सिद्ध चालीसा का ११ या २१ बार पाठ करे तद् उपरान्त उनकी आरती तथा भजन गा सकते हैं। अतः कार्य सफलता, संकट हरण, सुख समृद्धि का लाभ होगा।

।। श्री चौरासी सिद्ध गायत्री-पाठ ।।

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गंगा गोदा अनुपान शिला, 'सुमीर बैठे गुरु गोरख बाला। अनभय पंथ अनन्तशाखाः ऋद्धि-सिद्धि सिद्धांका मेला। ॐ कार आदिनाथ तां अनुपम शिष्यः मायामछन्दर

जालन्धर शिष्य। सनक सनातन सनन्द सिद्ध सनत्कुमार मार्कण्डेय जी सिद्ध मिन सिद्ध सिद्ध विरूपाक्ष सिद्ध शृंगेरीपा चोली धोड़ा शिष्य। माया पार्वती उदयनाथ सिद्धः शिलनाथ टिण्डीनी योगी सिद्ध कानपा उत्पत्ति गजकर्ण- गजकंथड़नाथ। इनकी कथनी करनी वज्र काया भ्रवर गुफा अमिरस प्याला रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।।१।।

ॐ मछन्दर पूता गोरक्ष सिद्ध, मन्जु-तारा शाबर सिद्ध। सिद्धासन सिद्धः कालनाथ सिद्ध, प्रभुदेव तां प्रकाशनाथ शिष्य। नारदा-शारदा तां परमानन्द शिष्य, गौरवनाथ जी का मेरु सिद्ध सन्तोषनाथ विष्णुजी गोपाल सिद्ध अचल अचम्भेनाथ शेष सिद्ध सत्यनाथ ब्रह्माजी जलरुप सिद्ध। इनकी योग जुगती सान्धे काया। काल लागे ना लिपै माया। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी बाला।।२।।

ॐ जती गोरख आप विराजे। अपना गुरु आपै चेले। कनकाई-भुसकाई-बाल गुन्दाई; बालकनाथ, सारस्वताई। राजा भर्तृहरि गोपीचन्द सिद्ध भर्तृहरि बैराग कायनाथ सिद्ध मुनि कपिल धून्धली सिद्ध। बिरंबक सिद्ध लधाई सिद्धः भूचर खेचर हवाई सिद्ध। ब्रह्माई-नरमाई-मस्तनाथ सिद्ध श्रुताई-भगाई-मनसाई

सिद्ध। सहजाई सिद्ध काकचंण्डी सिद्ध। लंका, रावण-राजा राम सिद्ध। गेहल्ला रावल गोरनाथ सिद्ध दया-दरिया सुखदेव सिद्ध : अल्लम-मलक अड़बंग सिद्ध। एकनाथ, औघड-वरदा सिद्ध, रतन नाथ जी का कोरन्ट शिष्य। सिद्ध पूरणमल चौरंगी सिद्धः नागार्जुन नागा मानिक सिद्ध। गैनी-निवृति-ज्ञानदेव सिद्धः सिद्ध चर्पट,सोहिरोबा सिद्ध। चक्रनाथ, वक्रनाथ-सूर्य सिद्धः भद्रनाथ-मद्रनाथ - चंन्द्र सिद्ध। नाथ निरंन्जन सिद्धपाद शिष्यः पीर सत्यनाथ याज्ञवाक शिष्य। सिद्ध बुद्ध-बिलेशाय सिद्ध, धीर-वीर-पिप्पलनाथ-सिद्ध। बाल -प्रौठ-जम्भ-सुरानन्द सिद्ध देव-धर्म-गरीबनाथ सिद्ध, इनकी ज्योत से ज्योत भया प्रकाशा चौरासी सिद्धां भया उजियाला गोरख कहे निरन्तर मेला-योगी जागों-योग जगाना, अपना माही आप ही प्रगटया गुरु शब्द अनहद बाजा रक्षा करे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी बाला। इतना नवनाथ चौरासी सिद्ध नाम लेते जाप जयन्ते, जल में अग्नि प्रगटेः अग्नि में अम्बर बरसे, अम्बर में वायु उड़ें, बिना पंख योगी उड़ें यही योगी जल ऊपर तरे, यही योगी अग्नि में ना जले। जिसकी रक्षा शम्भुजती गुरुगोरख नाथ जी करे। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

।। आरती चौरासी सिद्धों की ।।

जय देव जय देव जय चौरासी सिद्ध।
आरती उतारो मन भये मन्त्र मुग्ध।।
पंच प्राण पंच ज्योत पंच.....आरती।
साधु सन्त जन मन से करे बिनती।।
शक्ति भक्ति सह भक्त करे आरती
जय देव जय देव.....।।१।।
ॐ कार आदिनाथ और उदयनाथ।
सत्य, सन्तोष अचल अचम्भेनाथ।।
गजबेली कन्थड़ श्री चौरंगी नाथ।
मत्स्येन्द्र गोरक्ष भये नव हि नाथ।।
चौरासी सिद्धों के थे गुरु नव हि नाथ।.....
जय देव जय देव.....।।२।।
देखो देखो पधारे श्री चौरासी सिद्ध।
आरती उतारो भये मन प्रबुग्ध।।
सनक, सनातन सनन्दन नाथ।
सनत्कुमार सह मार्केण्डेय नाथ।।
काया वाचा मन समर्पण के साथ।
जय देव जय देव.....।।३।।
जालन्दर नाथ, मीन याज्ञवाल्यक्य।

कपिल काल सिद्ध कान्हा कोरंण्टय।।
श्रृंगेरी टिण्टीणी और सिद्धपाद नाथ।
मन्जु मल्लिका मेरु मानिक नाथ।।
तन मन धन सर्मपण के साथ....।
जय देव जय देव.....।।४।।
तारा शाबर, नाथ सिद्धासन सिद्ध।
देव, प्रभुदेव नारद देव सिद्ध।।
दया दरिया एवं धुन्दक्कार नाथ।
नागार्जुन नागा नरमाई के साथ।।
जप तप ध्यान सर्मपण के साथ.....।
जय देव जय देव.....।।५।।
विर, बिरबंक धीर धरम सन्त।
गेहल्ला रावल घोड़ा-चोलिपा संत।।
सुखदेव सुरत, साहिरोबा नाथ।
सुरानन्द सहजाई सारस्वताई नाथ।।
धर्म कर्म काण्ड सर्मपण के साथ.....।
जय देव जय देव.....।।६।।
खेचर भूचर सिद्ध चर्पट योगी।
भर्तृहरी गोपिचन्द अमर रस भोगी।।
कनक भुसकाई सिद्ध लधाई योगी।
हवाई-भगाई श्री श्रृताई जोगी।।

वज्र हो काया सिद्ध अमिरस भोगी.....।
जय देव जय देव.....।।७।।
चन्द्र चक्र वक्र गुरु-शिष्यों में प्रित।
पीर रत्न काया सूफी पंथ में जीत।।
मद्र भद्र लंका रावण थे लंका स्थान।
[1]यमद्वारे बालगुन्दा को दिया था ज्ञान।।
कृपा करो सिद्धो दो बस बुद्धि ज्ञान.....।
जय देव जय देव.....।।८।।
भक्त काकचण्डी एकनाथ सन्त।
मस्त-बालक नाथ शिव भक्त सन्त।।
ब्रह्माई नरमाई सिद्ध आई के पंथ।
भये चौरासी सिद्ध [2]अठराबारा के पन्थ।।
ज्ञान-ध्यान देदो मोक्ष मुक्ति ही सन्त.....।
नाथ विलास कहे सदा रहे संग सन्त।।
जय देव जय देव.....।।९।।
जय देव जय देव जय चौरासी सिद्ध।
आरती उतारू मन भये मन्त्र मुग्ध।

[1]लंकानाथ रावण का नाम है जो मृत्यु (यमद्वार) के समय लक्ष्मण जी (बालगुन्दाई नाथ) को ज्ञान दिया था।

[2]नाथ सम्प्रदाय के अठारह–बारह पंथों को ही भेष भगवान कहते है।

।। प्रार्थना चौरासी सिद्धों की ।।

श्री गणेशनाथाय नमः नाथ गुरुभ्यो नमः।
सिद्ध चर्तुऽसीति आदेशं श्री नवनाथ नमोऽस्तुते।।१।।
उत्पती जगत्स्थिते संहाररुपेन त्वाम् नमः।
स्वर्गः मृत्यु पाताले सर्व्यापेशु त्वां सिद्ध।।२।।
सदासर्वदा सिद्धो त्रिलोकवन्दिता त्वाम् नमो।
नमो आदेशं, नमो आदेशं नाथ सिद्धों त्वाम् नमो।।३।।
भक्ति साधनं तपस्यां सर्वमूर्ते त्वाम् नमो।
ऋद्धि सिद्धि सर्वेश्च भुक्तिमुक्ति प्रदायकम।।४।।
नाथः मूर्ते, रुद्रमूर्ते कालः मूर्ते त्वांम नमो।
योगारुढाचनमः सिद्धो तंत्रः मन्त्रः भयंकरं ।।५।।
नानाऽस्त्रशस्त्र धारेच ऋद्धि सिद्धि विभूषितम्।
घोरा घोरः महामन्त्र शक्ति शाबर त्वाम् नमोहं।।६।।
यः गोरक्षंसह सिद्धस्य अहं शरणम् गच्छामि।
रक्षः रक्षः सर्वत्रः त्वांम विना मम जीवनंम्।।७।।
सर्व वरद् हस्त च सर्वज्ञं कृपावन्तम्।
पापहारं तापहारं विघ्नहारं त्वाम नमौ।।८।।

क्षमस्व सिद्धः नाथो क्षमाशील परात्परं।
अलख निरंजनो नाथं सिद्धः चर्तुग्रीति नम्।।९।।
यः स्तुतिस्तोत्रं पूजयार्चनं त्वाम् प्रसिद् च सिद्धो।
प्रसिद प्रसिद सानन्दे ह्रदय निवासनम्।।१०।।
एकः कालः पठेन्नित्यं महापापं विनाशनम्।
द्विकालः यः पठेन्नित्यं सुखं सम्पन्नं समन्वितः।।११।।
त्रिकालः यः पठेन्नित्यं महाशत्रुः विनाशनम।
नाथः सिद्धः भंव नित्य प्रसन्न वरद शुभं।।१२।।
इति नाथ विलासनिर्मित श्री सिद्ध चतुरअसीति स्तोत्रः च प्रार्थना सम्पूर्णम्।।

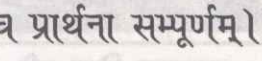

साखी

प्रेम गुरु से चाहिए पन्थ भरोसा नाये।
चाहे तो घर बस करे चाहे बनको जाये।।
पन्थ सरोवर बैठ के गोरख दीन्हा ज्ञान।
गुरु साखी सिखवे बिना क्या शब्द की पहचान।।
गोरख बहता नही हैं कूप बन्धा संसार।
बहते में गोता लगे छुटे मैल अपार।।
जीव अलख के देश में दया काल की होये।
तन घर के भक्ति करे मार सके ना कोये।।

।। शिव-आरतियाँ ।।

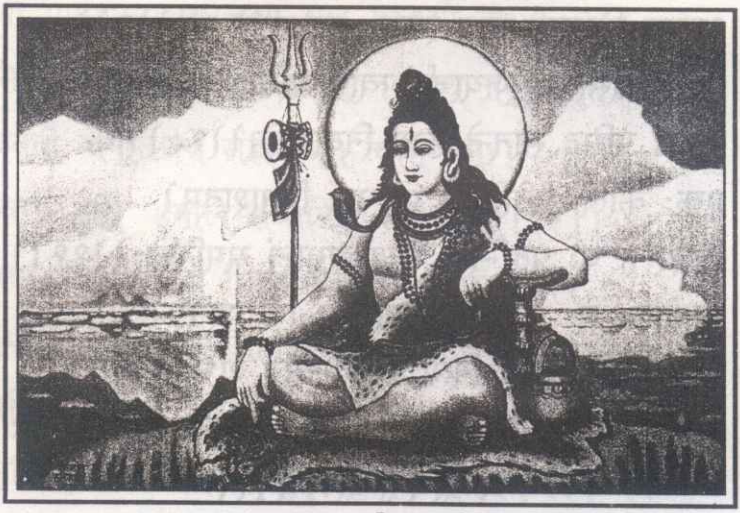

भगवान शिव जी

निवेदन :– भगवान शिव जी को ताम्र पात्र में जल + काले तिल + सफेद चंदन से तथा विल्व पत्र, कन्हेर फूलो से ॐ नमः शिवाय मन्त्र द्वारा १०८ या १००८ बार अभिषेक करे और निम्न आराधना–स्तोत्र का पाठ करके आरती–प्रार्थना करे। जिससे आपके जीवन के सभी मनोरथ, मनोकामनायें पूर्ण होगी।

✱ शिव आराधना ✱

जय शिवशंकर जयगंगाधर करुणाकर करतार हरे।
जय कैलासी जय अविनाशी सुखराशि सुखसार हरे।
जय शशिशेखर जय डमरुधर जय-जय प्रेमागार हरे।
जय त्रिपुरारी, जय मदहारी, अमिम अनन्त अपार हरे।

निर्गुण जय-जय सगुण अनाभय, निराकार साकार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो! पाहि-पाहि दातार हरे।।१।।
जय रामेश्वर, जय जोगेश्वर वैद्यनाथ केदार हरे।
मल्लिकार्जुन, सोमनाथ, जय महाकाल ओंकार हरे।
त्र्यम्बकेश्वर, जय घुश्मेश्वर, भीमेश्वर जगतार हरे।
काशीपति श्री विश्वनाथ, जय मंगलमय अघहार हरे।
नीलकण्ठ जय भूतनाथ जय मृत्युन्जय अविकार हरें
पारवती पति हर-हर शम्भो ! पाहि-पाहि दातार हरे।।२।।
जय महेश, जय-जय भवेश, जय आदिदेव महादेव विभो।
किस मुख से हे गुणातीत, प्रभु तब अपारगुण वर्णन हो।
जय भवकारक, तारक, हारक, पातक धारक, शिवशम्भो।
दीन दुःखहर, सर्वसुखाकर प्रेम सुधाकर की जय हो।
पार लगा दो भवसागर से, बनकर करुणाधार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो ! पाहि-पाहि दातार हरे।।३।।
जय मनभावन जय अतिपावन, शोकनशावन शिवशम्भो।
विपत विदारन, अधम उधारन, सत्य सनातन शिवशम्भो।
सहज वचन, हर जलजनयनदर, धदलवरन तन शिवशम्भो।
मदन कदनकर पाप हरनहर चरण मनन धन शिवशम्भो।
विवसन विश्वरूप, प्रलयकर जग के मूलाधार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो ! पाहि-पाहि दातार हरे।।४।।

★ शिव स्तुति स्तोत्रम् ★

भोलानाथ कृपालु, दयामय, ओढ़रदानी शिव योगी।
निमिषमात्र में देते हैं नवनिधि मनमानी शिव योगी।
सरल हृदय अति करुणा सागर अकथ कहानी शिव योगी।
भक्तों पर सर्वस्व लुटाकर बने मशानी शिव योगी।
स्वयं अकिंचन, जन मनरंजन पर शिव परम उदार हरे।।
पारवती पति हर-हर शम्भो ! पाहि-पाहि दातार हरे।।५।।
आशुतोष इस मोहमयी निद्रा से मुझे जगा देना।
विषय वेदना से विषयों की मायाधीश छुड़ा देना।
रुप सुधा की एक बूँद से जीवनन्मुक्त बना देना।
दिव्य ज्ञान भण्डार युगर चरणों की लगन लगा देना।
एक बार इस मन मन्दिर में कीजै पद संचार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो ! पाहि-पाहि दातार हरे।।६।।
दानी हो दो भिक्षा में अपनी अनपायिनी भक्ति प्रभो।
शक्तिमान हो, दो अविचल निष्काम प्रेम की शक्ति प्रभो।
त्यागी हो दो इस असार संसार में पूर्ण विरक्ति प्रभो।
परमपिता हो दो तुम अपने चरणों में अनुरक्ति प्रभो।
स्वामी हो निज सेवक की सुन लेना करुण पुकार हरे।

पारवती पति हर-हर शम्भो ! पाहि-पाहि दातार हरे।।७।।
तुम बिन बेकल हूँ प्राणेश्वर आ जाओ भगवन्त हरे।
चरण शरण की बाँह गहो हे उमारमण प्रियकन्त हरे।
विरह व्यथित हूँ दीलन दुःखी हूँ दीन दयालु अनन्त हरे।
आओ तुम मेरे हो जाओ आ जाओ श्रीमन्त हरे।
मेरी इस दयनीय दशा पर कुछ तो कैसे विचार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो ! पाहि-पाहि दातार हरे।।८।।
पारवती पति हर-हर हर-हर हर-हर महादेव।

।।भगवान शिव शंकर की आरती।। (प्रचलित)

जय शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धगी गौरां।।१।।
ॐ हर-३ महादेव
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे।।२।।
ॐ हर-३ महादेव
दो भुज चतुर्भुज अष्ट भुज तुम सोहे।
तीनो रुप निरखता त्रिभुवन जग मोहे।।३।।
ॐ हर-३ महादेव

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।।४।।

ॐ हर-३ महादेव

अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद लेपन भाले शशि धारी।।५।।

ॐ हर-३ महादेव

कर मध्ये सुकमण्डल चक्र त्रिशूल धरता।
दुःख हरता सुख करता युग पालन करता।।६।।

ॐ हर-३ महादेव

शिवजी के हाथों में कंगन कानों में कुण्डल गल मुण्डन माला।
जटा में गंग विराजत ओढ़त मृगछाला ।।७।।

ॐ हर-३ महादेव

सावित्री वर ब्रह्मा लक्ष्मी वर विष्णु।
अर्धगी बहुरंगी शिव गौरां संगी।।८।।

ॐ हर-३ महादेव

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव तीनों एक स्वरुप अन्तर नहीं करना।
हर जपते ब्रह्मा शिव रटते विष्णु भवसागर तरना।।९।।

ॐ हर-३ महादेव

सचिदानन्द स्वरूपा त्रिभुवन के राजा।
चारों वेद उच्चारत अनहद के बाजा।।१०।।
ॐ हर-३ महादेव
पार्वती पर्वत में बस रही शटर कैलाशा।
आक धतूरे का भोजन भस्मी में वासा।।११।।
ॐ हर-३ महादेव
चौसठ योगनी मंगल गावत नृत्य करत भैरो।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।।१२।।
ॐ हर-३ महादेव
काशी में विश्वनाथ विराजे नन्दा ब्रह्मचारी।
नित्य उठ भोग लगावत महिमा अति भारी।।१३।।
ॐ हर-३ महादेव
शिवजी की संध्या आरती निशदिन जो गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे।।१४।।
ॐ हर-३ महादेव

साखी

गोरख अपने नाम का धन्धा दिया बनाय।
परखेगा कोई पारखी तन की सुधि भुलाय।।

✸ शिव (प्रार्थना) ✸

ॐ शिव हर शंकर गौरीशं, वन्दे गंगाधर मीशम्।
शिव रुद्रं पशुपति विश्वानाथ, कलहर काशीपुरी नाथम्।
भज पार लोचन परमानन्दा, नील कण्ठा त्वं शरणम्।
शिव असुर निकन्दन भव दुः ख भंजन, सेवक के प्रतिपाला।
बम बम आवागमन मिटाओ शंकर, भज शिव बारम्बार।
बम बम शिव हर शम्भू सदा शिव सांब, हर हर सदा सदा शिव सांब।
महादेव शम्भू सभी भांति पूरे, लपेटे जटाजूट खावे धतूरे।
चढ़े शीश गंगा भुजँगा विराजे, गले मुण्डमाला भस्मी रमावे।
महादेव शम्भू सभी भांति पूरे, लपेटे जटाजूट डमरु बजावे।
चढ़े शीश गंगा भुजँगा विराजे, गले नाग माला मृगछाला बिछावें।
महादेव योगी सभी ज्ञान पूरे, लपेटे जटाजूट नादी बजावें।
चढ़े शीश गंगा भुजँगा बिराजे, रहे देव बाला सभी काम साजे।

।। देवी (शक्ति माताजी) की आरतियाँ।।

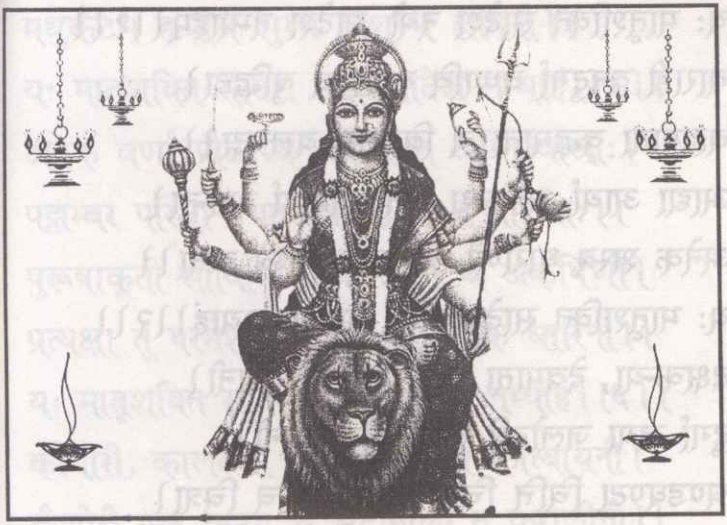

जय माँ दुर्गा देवी

निवेदन :– देवी–माताजी या ईष्टदेवी की श्रृंगार सह पंचोपचारे पूजन करे भोग–पान का बीड़ा देकर निम्न शक्ति अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र का ६ या १८ या २१ या १०८ बार पाठ करे और निम्न आरती–भजन का गायन करे जिससे नव विधा भक्ति, सभी प्रकार की प्रतियोगता में सफलता, कोर्ट कचहरी में न्याय, शादी, उत्तम नौकरी, व्यवसाय की प्राप्ति तथा भूत प्रेतादि संकटों से दूर होगे।

।। श्री शक्ति अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं ।।

ॐ शक्तिमातृ महाशक्ति पराऽपरा निजा शिवानी।
सती साध्वी शाम्भवी, सर्वाशिवः शूलधारीनी।।
भव्याऽभव्या भवप्रिता भवानी भव मोचनी।

ब्रह्मी बहुला बहुलाप्रेमी च भाव्या भाविनी।।
यः मातृशक्ति सादेश नमो आदेश नम्याहम्।।१।।
वाराही वनदुर्गा वैष्णवि बुद्धि च बुद्धिदा।
वह्यमाता वृद्धमाता च बिमलाः बलप्रदा।।
आद्या आर्या अहंकारा अतः अपर्णा अनन्ता।
अनेक शस्त्र धारीणी च अनेक शस्त्र हस्ता।।
यः मातृशक्ति सादेश नमो आदेश नम्याहं।।२।।
दक्षकन्या, देवमाता, दक्ष यज्ञ विनाशिनी।
दुर्गा जया जलोदरि कलमंजीर रंजिनी।।
चण्डघण्टा चित्ति चिता चित्तरूपा च चित्रा।
चण्डमुण्ड विनाशिनी चिन्ता चामुण्डा त्रिनेत्रा।।
यः मातृशक्ति सादेश नमो आदेश नम्याहं।।३।।
सर्वमन्त्रमयी सत्ताश्च सत्यानन्द स्वरूपिनी।
सर्वासूर विनाशाय सत्या सर्वास्य धारिणी।।
सर्व दानव घातिनी च सदागती सुर सुन्दरी।
सर्व शास्त्र रमिणी च सर्व विद्या सुन्दरी।।
यः मातृशक्ति सादेश नमो आदेश नम्याहं।।४।।
मनः तनः महातपा ममतामयी माहेश्वरी।
मुक्त केशी मातंगी, महाबला च महोदरी।।

मतंगमुनी पुजिता च महिषासुर मर्दिनी।
मधुकैटभ हन्त्रीच शुम्भ निशुम्भ हानिनी।।
यः मातृशक्ति सादेश नमो आदेश नम्याहं।।५।।
अनेक वर्णा प्रौढा च अप्रौढा त अग्निज्वालाः।
पट्टाम्बर परिधानी पाटलावती च तं पाटलाः।।
पुरूषाकृती सावित्रि क्रिया ज्ञाना च उत्कर्षिणी।
प्रत्यक्षा तू परमेश्वरी, एन्द्री च पिनक धारिनी।।
यः मातृशक्ति सादेश नमो आदेश नम्याहं।।६।।
कौमारी, कालरात्री च कुमारी त्वा कात्यायनी।
कैशोरी एक कन्या च भद्रकाली तू करालीनी।।
युवती अमेय विक्रमा यनि श्च रत्नप्रिया।
सर्ववाहन वाहना वैष्णवि तं विष्णु माया।।
यः मातृशक्ति सादेश नमो आदेश नम्याहं।।७।।
अनन्त झूरा घोर रूपा रौद्रमुखी तपस्विनी।
लक्ष्मी ब्रह्मवादिनी त्वां नित्या नारायनि।।
यः श्री मातृ शक्ति च अष्टोत्तरशतनामानि।
पढ़ेत नर त्रिकाल नित्य सुख समृद्धि प्राप्यर्थ।
यः मातृशक्ति सादेश नमो आदेशं नम्याहम।।८।।

नाथ सिद्ध जोगीना सर्वत्र शक्ति समाहितः।
गुरु शब्द शक्ति बान, नाथ विलास तं भजे।।

इती नाथ विलास निर्मित श्री मद् मातृशक्ति
अष्टोत्तरशत नाम सम्पूर्ण।।

।। आरती श्री दुर्गा जी की (प्रचलित) ।।

जय अम्बे गौरी, मैया जय अम्बे गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी।।
जय अम्बे

मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्वल से दोऊ नैना, चन्द्रबदन नीको।। जय अम्बे

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।। जय अम्बे

के हरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर मुनि-जन सेवत, तिनके दुः खहारी।। जय अम्बे

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।। जय अम्बे

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।। जय अम्ब

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे।। जय अम्ब
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी।। जय अम्बे
चौसठ योगिनी मंगल गावै, नृत्य करत भैरू।
बाजत ताल मृंदगा, अरु बाजत डमरू।। जय अम्बे
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुखहरता, सुखसम्पत्ति करता।। जय अम्ब
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।। जय अम्बे
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्री माल के तुम राजत, कोटि रतन ज्योति।।
जय अम्बे
श्री अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावै।।
जय अम्ब

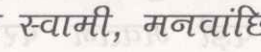

साखी

जैसा गोरख हमने देखा सब जग में बड़ा महान।
सोलह कला गोरख के अन्दर कौन सके पहचान।।

।। अथ ज्वाला काली सप्तवार स्तुति ।।

(प्रचलित)

(हिमाचल प्रदेश में ज्वाला जी गोरख डिब्बी स्थान में यह आरती नाथ सिद्ध गाते है। विशेषतः नवरात्रों में पात्र देवता स्थापित होती है और तब सभी नाथ सम्प्रदाय के नाथ योगेश्वर ६ दिन शक्ति के अनुष्ठान में बैठते हैं।)

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल ले ज्वाला तेरी भेंट धरे।
सुन जगदम्बे! न कर बिलम्बे सन्तन के भण्डार भरे।
सन्तन प्रतिपाली करत खुशाली जै काली कल्याण करे।।१।।

बुद्धि विधाता तूं जगमाता तैं मेरे कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा शरण तुम्हारी आन पड़े।
जब-जब भीड़ पड़ी भक्तन पर तब-तब आय सहाय करें
सन्तन प्रतिपाली करत खुशाली जै काली कल्याण करे।।२।।

वीर वार तैं सब जग मोह्यो तरुणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे कहीं भार्या भोग करे।

तुम्हरी महिमा किस मुख वर्णू बैठी कारज आप करे।
सन्तन प्रतिपाली करत खुशाली जै काली कल्याण करे।।३।।

शुक्र सुखदाई सदा सहाई सन्त खड़े जयकार करे।
ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिये भेंट देन तेरे द्वारा खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोने का छत्र फिरे।
सन्तन प्रतिपाली करत खुशाली जै काली कल्याण करे।।४।।

वार शनिश्चर कुंकुम वर्णी लोकड़ वीर को हुक्म करे।
खड़ग खप्पर त्रिशूल हाथ लिये रक्त बीज को भस्म करे।
शुम्भ निशुम्भ क्षणहि में मारे महिषासुर का संहार करे।
सन्तन प्रतिपाली करत खुशाली जै काली कल्याण करे।।५।।

ऐतवार तुम आदि क्वारी जन अपने के कष्ट हरे।
कुपित होकर दानव मारे चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखो दया रूप से पल में संकट दूर करे।
सन्तन प्रतिपाली करत खुशाली जै काली कल्याण करे।।६।।

सोम स्वभाव धर्‌यो मेरी माता जन की अर्ज कबूल करे।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी अटल भवन में राज करे।
दर्शन पावें मंगल गावें सिद्ध साधक तेरी भेंट करें।
सन्तन प्रतिपाली करत खुशाली जै काली कल्याण करे।।७।।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शिव शंकर हरि ध्यान धरे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती चँवर कुबेर डुलाय करे।
जय जननी जय मातु भवानी अटल भवन में राज करे।
सन्तन प्रतिपाली करत खुशाली जै काली कल्याण करे।।८।।
सात बार की महिमा वरणू माँ की महिमा अति भारी।
चन्द्र सूरज तपे तेज से तेरे तेज की बलिहारी।
सुख धन देने वाली माता एक पलक में निहाल करे।
सन्तन प्रतिपाली करत खुशाली जै काली कल्याण करे।।९।।

।। आरती माता हिंगलाज की ।।

(यह आरतियाँ नाथ सिद्धों के योगमाया, शंखढाल कर्म में बड़े ही भक्ति से गायी जाती है। जिसमें माता हिंगलाज, योगमाया, माई की ज्योत तथा पद्मावती देवी इत्यादि आदि देवियों का समावेश है।)

हिंगलाज भवानी तेरी आरती। अच्छी निर्मल ज्योति जगे दिन राती।। टेक।।

सतयुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा काहे की तेरी बात, काहे के सिंहासन बैठे प्रजाद राज।

सतयुग मध्ये सोने का तेरा दीवड़ा सोने की तेरी बात, सोने के सिंहासन बैठै प्रजाद राज।।१।।

त्रेतायुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात, काहे का सिंहासन बैठे हरिश्चन्द्र राज।

त्रेतायुग मध्ये चान्दी का तेरा दीवड़ा, चान्दी की तेरी बात, चान्दी के सिंहासन बैठे हरिश्चन्द्र राज।।२।।

द्वापर युग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात, काहे का सिंहासन बैठे पांचों पाण्डव राज।

द्वापर युग मध्ये ताम्बा का तेरा दीवड़ा, ताम्बा की तेरी बात, ताम्बा के सिंहासन बैठे पांचों पाण्डव राज।।३।।

कलीयुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात, काहे का सिंहासन बैठे बलिचन्द राज।

कलीयुग मध्ये मिट्टी का तेरा दीवड़ा, मिट्टी की तेरी बात, मिट्टी के सिंहासन बैठे बलिचन्द राज।।४।।

युगा युगा मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात, काहे के सिंहासन बैठे गुरु गोरक्षनाथ।

युगा युगा मध्ये सत का तेरा दीवड़ा, सत की तेरी बात, सत के सिंहासन बैठे गुरु गोरक्षनाथ।।५।।

हिंगलाज भवानी तेरी आरती। अच्छी निर्मल ज्योति जगे दिन राती।। भवानी तेरी आरती .....

साखी

लासुन से चन्दन कहे मति बिगाड़े साथ।
निगुरा से सुगरा डरे कहते गोरखनाथ।।

।। आरती योगमाया जी की ।।

माता तू है जोता वाली, जय हो जय खप्परवाली।
तेरे ही गुण गावे आरती, ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।ऽ।।

सत्य सनातन सिद्ध योगीणी, तु है ब्रह्मा स्वरुपा।
तू ही सतचित सुन्दरी बाला, तु ही हिंगलाज माता।
सुन्दर रुप सुहानी, मन को मोहने वाली, मन को हरने वाली,
सिद्धो को हर्षाने वाली, सुन्दरी .....
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।१।।

तेज अनन्त ज्योति ज्वाला, आत्म ज्योति को माना।
चर्तुजुगो का चौका माण्डा, चर्तुज्योत का कोना।
तु है तु शक्ति शाली, कमलासन बैठने वाली,
अष्टसिद्धी देने वाली,जती सतीओ को सवारती.....
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।२।।

नाथ सिद्ध का योगमाया से बड़ा है निर्मल नाता।
तन्त्र मन्त्र सब सिद्ध हुये पर तुम बिन कैसे माता।
शिव भक्ति शक्ति वाली, गत गंगा लाने वाली,
अमृत बरसाने वाली,
मुक्ती दिलाने वाली सुन्दरी .....
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।३।।

कैलास गीरी पर खड़े तुम्हारे लेकर भक्ति सारी।
फेरे लगाये नाम तुम्हारे मिटा दे यम की फासी।
सौ सौ सिंहबलशाली, तुम रक्षा करने वाली, सत सतवन्ती वाली सुन्दरी,
कैलास पर्वत वासनी .....
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।४।।
घोर अघोर काल गायत्री रुप तुम्हारा न्यारा।
हे बीज बाला, हे सत् बाला बान्दे यम जंजिरा।
शंख ढालने वाली, स्वर्ग चढ़ाने वाली, मुक्ति ही देने वाली
सिद्धा को जाके सवारी .....
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।५।।
कलश पाट में अखण्ड जोती, महामाया का मन्त्र।
हूकम पीर का जोगणी बोले अमर बाला का तन्त्र।
तू है सूरजिवन वाली, मन्त्र की कौली वाली जोग जुगती वाली
साध सन्त को प्यारी सुन्दरी
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।६।।
सप्त पौडियाँ स्वर्ग चढ़ाई माता तुम हो बलशाली।

धर्म शंख की नाद सुनाई बाला तुम शक्तिशाली। नाद ब्रह्मावाली, तन्त्र मन्त्रों वाली, सप्त पूरीया वाली अपरम्पार वाली सुन्दरी

ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।७।।

नहीं चाहिये धन और दौलत ना चान्दी ना सोना। हम तो मांगे तेरी शरण में बस मुक्ति का एक कोना। माया से बचाने वाली, बिगड़ी बनाने वाली, पाप पूण्य से न्यारी ऋद्धि सिद्धियों वाली सुन्दरी

ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।८।।

चरण शरण में पड़े तुम्हारे दे दो हमको मुक्ति। वरद हस्त शीश रख दो माना योग की शक्ति। भर दो भक्ति रस प्याली, नव निध भक्ति वाली, सिद्धो के काज सवारी .....

ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।९।।

माता तू है जोता वाली, जय हो जय खप्पर वाली, तेरे ही गुण गावे आरती, ओ बाला हम उतारे तेरी आरती ..... ओ बाला हम उतारे तेरी आरती....

नोटः– यह आरति भी शंखढाल कर्म में बालासुन्दरी ज्योत के सन्मुख गायी जाती है।

।। माई के ज्योत की (आगुआनियाँ) आरती ।।

(नाथ सिद्ध शंखढाल क्रिया में माई की स्थापना के उपरान्त यह आरती गाते है।)

ॐ हर हर करु नाथ तेरी आरतियाँ।।धु।।

ॐ गुरुजी पूर्व दिशा में तुझे माई स्मरु सूरज है आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सूरा बजावे सरस्वतियाँ अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।१।।

ॐ गुरुजी पश्चिम दिशा में तुझे माई स्मरुँ चन्द्रमा अगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ, अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।२।।

ॐ गुरुजी दक्षिण दिशा में तुझे माई स्मरुँ हनुमन्त वीर है आगुआनियाँ चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।३।।

ॐ गुरुजी उत्तर दिशा में तुझे माई स्मरुँ गणपति आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा

बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।४।।

ॐ गुरुजी इशान्य दिशा में तुझे माई स्मरुँ महेश आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।५।।

ॐ गुरुजी अग्नेय दिशा में तुझे माई स्मरुँ भैरु आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।६।।

ॐ गुरुजी नैवृत्य दिशा में तुझे माई स्मरु विष्णुजी आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।७।।

ॐ गुरुजी वायव्य दिशा में तुझे माई स्मरु ब्रह्माजी आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल

गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।८।।

ॐ गुरुजी आकाश दिशा में तुझे माई स्मरु इन्द्रजी आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।९।।

ॐ गुरुजी पाताल दिशा में तुझे माई स्मरु शेषजी आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।१०।।

ॐ गुरुजी नव खण्ड मैं तुझे माई स्मरु श्री गुरु गोरक्षनाथजी आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।११।।

।। आरती माता पद्मावती की ।।

(शंखढाल में भैरव एवं शक्ति हवन के पश्चात् यह आरती नाथ सिद्ध बोलते है।)

ॐ जय पद्मावती माता, जय पद्मावती माता।
आरती करु मैं तुम्हरी, आत्मज्योति ज्वाला।।
ॐ जय पद्मावती माता।।ऽ।।

एक ओंकार, साम्भ सदाशिव, शिव शीश धारे
माता शिव शीश धारे।
हंसावृढ़ कमलासन, शेष वाहन साजे
ॐ जय पद्मावती माता ....।।१।।

पद्मवर्ण, पद्मासन पद्महस्त सोहे,
माता पद्महस्त सोहे
धर्म चक्र को धारे, कमल कलश ही धारे
चतुर्भुज सोहे ॐ जय पद्मावती माता ....।।२।।

पद्ममाला, बनमाला कण्ठमाला शोभे
माता कण्ठ माला शोभे,
केशर तिलक लगावे, मुकुट मणि को धारे,
त्रिभुवन की माया ॐ जय पद्मावती माता....।।३।।

कुंकुम, कज्जल, कांच कबरी कर्ण फूल भारी
माता कर्ण फूल भारी
कंगण कर में धारे, मंगल मन को भाये
हस्तांगुली साजे, ॐ जय पद्मावती माता....।।४।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव आरती करे माता
तेरा भजन करे माता
ब्रह्मादिक सनकादिक, नारद, शारद इन्द्रा सर्व ब्रह्म संगा
ॐ जय पद्मावती माता ....।।५।।
योग माता, योग माया, योगयुक्ति धारे,
माता योगयुक्ति धारे
मोक्ष मुक्ति की माया, अजर अमर की काया
सबकुछ तुमरी माया ॐ जय पद्मावती माता...।।६।।
हल्दी सिन्दूर पान सुपारी, चना फूल सजधार
माता चना फूल सजधार,
धूप दीप नैवेघ, गन्ध चन्द व्यंजन सब भोग लगे अपार
ॐ जय पद्मावती माता ....।।७।।

रुप सुहानी नार सुहागिन इस विध पूजा रचे
माता इस विध पूजा रचे
सुख सम्पत्ति घर आवे, सब संकट ही टारे
मन वांछित फल पाये, ॐ जय पद्मावती माता....।।८।।
ॐ जय पद्मावती माता, जय पद्मावती माता
आरती करु मैं तुम्हरी आत्मज्योति ज्वाला
जय पद्मावती माता ....

साखी

लगा टिकोरा शब्द का उड़ गई पोथी ग्रन्थ।
पोथी ग्रन्थ की गम नहीं चलते भये महन्त।।
साधु होना कठिन है जग खान्डे की धार।
डगडग होये तो कट मरे गहे तो उतरे धार।।
पढ़ पढ़ के पत्थर भाये लिख लिख भये ईट।
तनी मनुवा ना पड़ी नाथ नाम की छींट।।
पड़ पड़ के जग मुआ पंडित भया न कोये।
ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े से पंडित होये।।

साखी

हम जानी तुम सन्त हो तुम्हें सुनाया ज्ञान।
प्रेम भाव गुरुपर नहीं तो नहि चलेंगे बान।।

।। जय बाबा भैरवनाथ जी ।।

श्री भैरव नाथ जी

निवेदन :– काल भैरव नाथ या ईष्ट भैरव नाथ जी का पूजन करके लाल पुष्प या लाल पुष्प माला, हनुमान सिन्दूर का तिलक, सरसों के तेल का दीपक–उद गुग्गल धूप–तिल्ली के तेल से स्नान काला कपड़ा–साबुत उड़द–गुड़+दही या रोट–नारियल चढ़ा के ८–८ लवंग इलायची चढ़ावे निम्न स्तुति प्रार्थना करे और निम्न आरती करे। जिससे गृहदोष–भूतप्रेत बाधा, संकटों से रक्षा, शत्रु पर विजय प्राप्त होगी।

।। श्री भैरव नाथ स्तुति ।।

(तर्ज–भये प्रगट कृपाला दीन दयाला)

भैरव बलकारी आनन्द कारी, गल पुष्पन की माला।
शिर जटा सुहावनी अति मन भावनी, लोचन दृष्टि रसाला।
कर्ण कुण्डल शोभित भस्मी भूषित, कटि में नाग शुभ काला।
हम शरण तुम्हारी करो रखवारी, भैरव नाथ दयाला।।१।।
कर खप्पर छाजै डमरु बाजै, सोहे शस्त्र विशाला।
प्रेतादिक कंपै काल ने झंपै, डरपत नर भूपाला।
सुर नर गुण गावे शीस नवावे, महिमा रूप निराला।
हम शरण तुम्हारी करो रखवारी, भैरव नाथ दयाला।।२।।
अधम उधारन दुष्ट विदारण, सन्तन के रखवाला।
जो नाम उच्चारे भये सुखारे, अभय उन्हें कर डाला।
प्रभु पतित पावन पाप नशावन, तुम हो देव भयाला।
हम शरण तुम्हारी करो रखवारी, भैरव नाथ दयाला।।३।।
सुन्दर तन भेषा नमत सुरेशा, गुण गावत है नृपाला।
जो शरण में आया शिष्य बनाया, जरा मरण भय टालां
तुम सबके स्वामी अन्तर्यामी, भैरव देव भुवाला।
हम शरण तुम्हारी करो रखवारी, भैरव नाथ दयाला।।४।।

करिये प्रभु दया शुभ हस्त छाया, करो त्रिलोक निहाला।
हरिये मम विपदा कृपा निकेता, भैरव देव पाला।
यह स्तुति गावै सब सुख पावै, मिल शीघ्र फल आला।
हम शरण तुम्हारी करो रखवारी, भैरव नाथ दयाला।।५।।

।। श्री भैरवनाथ जी की आरती ।।

जय भैरव स्वामी, प्रभु जय भैरव स्वामी।
करत कृपा निज जन पर, तुम अन्तर्यामी।।
जय भैरव स्वामी।।१।।

शीश जटा अति सुन्दर, गल पुष्पन माला।
कानन कुण्डल साजै, कटि में नाग काला।
जय भैरव स्वामी।।२।।

हाथ त्रिशूल सुशोभित, तन भस्मी धारी।
डमरु नाद बजावत, ध्वनि मंगल कारी।
जय भैरव स्वामी।।३।।

भैरव भयहर नाम तुम्हारा, अति मंगलकारी।
सब देवन में देव बली हो, सबके हितकारी।।
जय भैरव स्वामी।।४।।

भैरव शक्ति तुम्हारी, भक्तों के रखवारे।
नाम तुम्हारा, सबके काटत फन्द सारे।।
जय भैरव स्वामी।।५।।

ब्रह्मा विष्णु सुरेशा, तुम्हरों गुण गावे।
नारद शारद सब मिल, ध्यान सदा लावे।
जय भैरव स्वामी।।६।।

काशी के कोतवाल तुमहीं, प्रभु मुक्ति के दाता।
तुम्हारा ध्यान धरे जो, भव से तर जाता।
जय भैरव स्वामी।।७।।

भैरव नाथ की आरती, निश दिन जो गावे।
विनवत बाल त्रिलोकी, मुक्ति फल पावे।।
जय भैरव स्वामी।।८।।

साखी

गोरख सत् गुरु की संग रोसी संगत रंगती।
रंगना छूटे संग ना टूटे जाके अमर लोग की गति।।
खाल ओढ़ के नर देहि की मुफ्त जनम बिगारा।
गोरख कहै सुनो भाई साधु अब से चेत गवारा।।

द्वितीय भाग

★ भजनावली ★

ले लो भजनानन्द

।। श्री गणेश (भजन) ।।

ॐ गं गं गणपति नमो नमः ॐ गं गं गणपति नमो नमः
ॐ गं गं गणनाथ नमो नमः ॐ गं गं गणनाथ नमो नमः
ॐ गं गं गों जती नमो नमः ॐ गं गं गो जती नमो नमः

साखी

पन्छी उड़े अकाश में जल के ऊपर मीन।
जो ऐसी रहनी रहै ताहे मिले दुरबीन।।

।। गजानना - गजानना (भजन) ।।

गजानना - गजानना।।धु।।
गजानना गजानना श्री नाथा बल्लभ गजानना।
गजानना गजानना श्री नाथ कन्थड़ गजानना।।
गजानना गजानना श्री नाथ गजबेली गजानना।
गजानना गजानना श्री नाथ सिद्धों गजानना।।
गजानना गजानना श्री बुद्धि दाता गजानना।।
गजानना गजानना श्री नाथ ऋद्ध सिद्ध गजानना।
गजानना गजानना श्री मुक्ति दाता गजानना।।

* सद्गुरु जी के भजन *

।। मेरे दयालु गुरुदेव ।।

गुरुदेव दया करके, मुझे आपना बना लेना
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगा देना।।धु।।
करुणा निधी नाम तेरा, करुणा दिखलाओ तुम
सोये हुवे भाग्य को, हे नाथ जगाओ तुम
मेरी नाव भवर डोले, उसे पार लगा देना
गुरुदेव दया करके, मुझे आपना बना लेना
मैं शरण पड़ा तेरी चरणों में जगा देना।।१।।

तुम सुख के सागर हो, निरधन के सारे हो
मेरे मन में समाय हो, मुझे प्राण से प्यारे हो
नित माला जपू तेरी, नहीं दिल से भुला देना
गुरुदेव दया करके, मुझे आपना बना लेना
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगा देना।।२।।
पापी हूँ या कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ
घरबार छोड़के में, जीवन में अकेला हूँ
दुः ख का मारा हूँ मैं, मेरे दुः खड़े मिटा देना।
गुरुदेव दया करके, मुझे आपना बना लेना
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगा देना।।३।।
मैं सबका सेवक हूँ, तेरे चरणों का चेला हूँ
मुझे नाथ नहीं भुलाना, इस जग में अकेला हूँ
तेरे दरका भिखारी हूँ मेरे दोष मिटा देना
गुरुदेव दया करके, मुझे आपना बना लेना
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगा देना।।४।।

साखी

चटपट नाथ बिनती करे अरज हमारी लेवो।
शीश हमारा लीजिए भगती अपनी देवो।।

।। मेरे गुरु जी ने किये उपकार (भजन) ।।

मेरे गुरु जी ने किये उपकार, मेरा हो गया जीवन सार।।धु।।

अब तो प्यारे हो होशियार, जरा सोच समझकर विचार

कोई नही रे जग में आधार, अब करले ब्रह्म विचार

मेरे गुरु जी ने किया उपकार मेरा हो गया जीवन सार ।।१।।

देह बना है पंच तत्व का, हाड मास त्वचा नाड़ी रोम का

सारा पसारा एक बुंद का, अब देखो एकतत्व विचार

मेरे गुरु जी ने किया उपकार, मेरा हो गया जीवन सार।।२।।

आप ही उलट पलट के देखा, रूप के अंदर स्वरूप देखा।

सायं प्रकाश आप में लखा, करके पारक हो जाये पार

मेरे गुरु जी ने किया उपकार, मेरा हो गया जीवन सार।।३।।

गुरु आनन्दनाथ सोयम प्रकाशी, प्रकट काल को लगाई फाँसी

मिटाया दुः ख लाख चौरासी, कहे मंगलदास मिटाके जन्म मरन एक बार

मेरे गुरु जी ने किया उपकार, मेरा हो गया जीवन सार।।४।।

।। नाथ गुरु बिना कौन हरे दुख पीर ।।

(भजन)

नाथ गुरु बिना कौन हरे दुख पीर

जग की बात एक नहीं मानू ये माया की पीर।

भाई बन्द और कुटुंम कबीला संग ना जाय सरीर।।

नौ मास जब रहे गर्भ में उलटा टांगा सरीर।

गर्भ वास में भक्ती कबुला जब ले आये सरीर।।

गुरु बिन सुख कतहू ना पावा भटकत फिरे सरीर।

गोरख कहे सुनो भाई साधु सतगुरु हरेंगे दुः ख पीर।

।। सतगुरु बिना दर्द ना जाने कोई ।।

(भजन)

सतगुरु नाथ बिना दर्द ना जाने कोई।
घायल का गति घायल जाने दूजा जाने ना कोई।
ऊपर घाव सूज नहीं पड़ते दर्द कलेजवा होई।।
गुरु हमारे बने वह दवा हम दुखिया रुलाई।
ऐसी जड़ी देव सतगुरु जी रोग रहे ना पाई।।
अगम देश रे सतगुरु आये कहै विध मिलना होई।
गोरखनाथ वेद सतगुरु है दुखिया सुख भर सोई।।

।। आये मेरे घर सतगुरु जी (भजन)।।

मोरे अंगना में सतगुरु जी आये, कैसे कहू कहाई
जो मैं जानु गुरु मेरे मन में समाई।
ऊँचा ऊँचा सिंहासन लगाये रखती।।१।।
जो मैं जानू गुरु मेरे मन में समाई।
अंगना में धुनिया रमाये रखती।।२।।
जो मैं जानू गुरु मेरे मन में समाई।
गंगा जमना से कुम्भ भराये रखती।।३।।
जो में जानू गुरु मेरे मन में समाई।

अच्छा अच्छा भोजन बनाये रखती।
जो मैं जानू गुरु मेरे मन में समाई।।४।।
गोरख कहै सुनो भाई साधु।
हम जोगी डगर-डगर रमाई।।
जो मैं जानू गुरु मेरे मन में समाई।।५।।

।। छोड़ो छोड़ो गर्व अभिमान (भजन) ।।

छोड़ो छोड़ो गर्व अभिमान गुरु का नाम अब तो लेलो
इस मन को ध्यान लगावो।
गर्व लंकपति ने किया वह सिता छलने लागा।
श्री राम ने छोड़ा था बाण- ले लीया जो प्राण।।
अब तो लेलो इस मन को ध्यान.....।।१।।
गर्व कौवरो ने किया वह द्रौपदी छलने लाग्या।
श्री कृष्ण किया युद्ध जो खास, कर दिया कुल का नाश।।
अब तो लेलो इस मन.....।।२।।
गर्व नारद मुनी ने किया, जो गायण करणे लागा।
रिछनी ने किया अपमान, डूबा चूर चूर अभिमान।।
अब तो लेलो इस मन को .....।।३।।

गर्व बलभिम ने किया आप बलवान कहने लागा।
हनुमान ने किया अपमान चूर चूर डूबा अभिमान।।
अब तो लेलो इस मन को .....।।४।।
गर्व विश्वमित्रा ने किन्हा, आप ब्रह्मर्षि कहने लागा।
योग वसिष्ठ दिया जो ज्ञान छूट गया अभिमान।।
अब तुम तो लेलो मन को .....।।५।।
गर्व कानिपाने किया वो सिद्धि दिखाने लागा।
किया गोरख चमत्कार किया कानिफा नमस्कार।
अब तुम लेलो इस मन को ध्यान लगावो।
छोड़ो छोड़ो गर्व अभिमान, गुरु का नाम
अब तो लेलो इस मन को ध्यान लगावो।।६।।

।। गुरु बिना मुक्ति नहीं।।

(शब्द विलास)

मन मूरख समझे नहीं
अटल मृत्यु का ज्ञान।
पलख झपक देख आँखन
में पल पल काल समान।।१।।
ॐहं-सोहं प्राण है
अटल योग का ध्यान।

जपा अजपे मन शून्य है
यही मोक्ष मुक्ति का धाम।।२।।
सुख्ा दुःख संसार का
कब हुना मिटे यम फास
चरण-शरण जब सत गुरु का
भये आवागमन से पार।।३।।
सतगुरु बड़े ही ज्ञान है
शिष्य भये अज्ञान।
अज्ञानी को ज्ञान मिले
भये सतगुरुजी महान।।४।।
मोक्ष मुक्ति का मूल है
सतगुरु ज्ञान प्रकाश।
सतगुरु माही ज्ञान है
सतगुरु मुक्ति समान।।५।।
मोक्ष मुक्ति बस एक ही है
ध्येय प्राणी का महान
सती सती भाखत नाथ विलास
गुरु आनन्द का दास।।६।।
आदेश। आदेश।। आदेश।।।

।। आज भी है (शब्द विलास)।।

तलाशते तलाशते, सतगुरु दर्शन दिखलायेंगे।
क्या मन की यह मुराद पुरी होगी यह
तमन्ना आज भी है.....

कसम है खुदा की सतगुरु साहब इस ख्याल में आज भी है। काया घट में यह चेतन चिराग आज भी है। मुमकिन है यह मनमुराद आसमा पर छू सके। क्या खुशनसीब हम इन्तजार आपका आज भी है। ठिठकती हुयी कोई पहचानी धुन्ध दिल में आज भी है। क्या होगा दर्शन आपका यह हल्की सी आस आज भी है।

जिन्दगी का सफर-नामा लिपटी माया बड़ी ठगनी है। होंगे दरश आपके यह बहार आज भी है।

सतगुरु लायेंगे एक दिन लौट आने का बुलावा हर पल था, हरदम है, यह इन्तजार आज भी है।

साखी

मांगन से पहले वो मरे जो ना देखे भीख।
होते पे नाही न करें ये गोरख की सीख।।

।। गुरु गोरक्षनाथ जी के भजन ।।

जय जय नाथ श्री गोरक्षनाथ।
जय जय नाथ शिव गोरक्षनाथ।।

।। शिव जती गोरक्ष (भजन) ।।

(यह भजन नाथ सिद्धों का अति प्रिय भजन है। सब मिलकर प्रातः, संध्या, आरती, सत्संग, जागरण आदि प्रसंग में गाते हैं।)

ॐ शिव जती गोरक्ष, बाल जती गोरक्ष
रट मन आठों याम, भूलों मत सुबह और शाम।।टेक।।

नवनाथों में नाथ कहावे। क्यूं नहीं हमको पार लगावे।
अलख पुरुष निर्वान, भूलो मत सुबह और शाम।
शिव जती गोरक्ष, बाल जती गोरक्ष।
रट मन आठो याम, भूलो मत सुबह और शाम।।१।।
रावल सतगुरु सुमिरन कीनो, कंचन काया पल में दीनो,
दिया अमरपद ज्ञान, भूलो मत सुबह और शाम।
शिव जती गोरक्ष, बाल जती गोरक्ष।
रट मन आठो याम, भूलो मत सुबह ओर शाम।।२।।
गोपिचन्द भर्तृहरि राजा, छोड़ दिये सब राज समाना।
लगा अलख संग ध्यान, भूलो मत सुबह और शाम।
शिव जती गोरक्ष, बाल जती गोरक्ष।
रट मन आठो याम, भूलो मत सुबह ओर शाम।।३।।
शिव ने गोरक्ष रूप बनाया, पार्वती का भरम मिटाया।
दिया योग का ज्ञान, भूलो मत सुबह और शाम।
शिव जती गोरक्ष, बाल जती गोरक्ष।
रट मन आठो याम, भूलो मत सुबह ओर शाम।।४।।

जो कोई तुम्हरी शरण में आयो, मनवांछित फल पूर्ण पायो।

हो गये पूर्ण ज्ञान, भूलो मत सुबह और शाम।

शिव जती गोरक्ष बाल जती गोरक्ष।

रट मन आठो याम, भूलो मत सुबह और शाम।।७।।

।। देखो जोगी-गोरख दिवाना।।

(भजन)

मैंने जोग लिया रे तेरो नाम का। गुरु गोरख तेरो नाम का।

मेरो त्याग में गोरख, मेरो बैराग में गोरख।

मैंने जोग लिया रे तेरो नामका। गुरु गोरख तेरो नाम का।।धृ।।

मेरे तन मन में गोरख, मेरे चित्त बुद्धि में गोरख।

मैंने भगवा बाना पहना रे तेरो नामका।

गुरु गोरख तेरो नामका।।१।।

मेरे श्वांसों में गोरख, मेरे नादों में गोरख

मैंने नादजनेऊ पहना रे तेरो नाम का।

गुरु गोरख तेरो नामका।।२।।

मेरे तिलक में गोरख, मेरे त्रिपुण्ड में गोरख।
मैंने भभूती रमाई रे तेरो नामकी।
गुरु गोरख तेरो नामकी।।३।।
मेरे खप्पर में गोरख मेरे डमरू में गोरख।
मैंने कानोकुण्डल पहनारे तेरो नामका।
गुरु गोरख तेरो नामका।।४।।
मेरे आसन पर गोरख, मेरे वासन पर गोरख
मैंने मृगछाला बिछाया रे तेरो नामका।
गुरु गोरख तेरो नामका।।५।।
मेरे चिमटे में गोरख, मेरे त्रिशुल में गोरख
मैंने धुना चेताया रे तेरो नामका।
गुरु गोरख तेरो नाम का।।६।।
मेरे कमण्डल में गोरख, मेरे कुबडी में गोरख।
मैंने नादि बजाई रे तेरो नाम की।
गुरु गोरख तेरो नामकी।।७।।
मेरे जटाओं में गोरख, मेरे सैली में भी गोरख
मैंने तुम्बा बजाया रे तेरो नामका।
गुरु गोरख तेरो नामका।।८।।

मेरे भ्रमण में गोरख, मेरे रम्मतों में गोरख।
मैंने सारे तीरथ किये तेरो नामके
गुरु गोरख तेरो नामके।।९।।
मेरे ध्यान में गोरख मेरे तपस्या में भी गोरख
मैंने अलख जगाई रे तेरो नामकी
गुरु गोरख तेरो नाम की।।१०।।
मेरे नयनों में गोरख धाम, मेरे हृदय में गोरख नाम।
मैंने सब पूजा पाठ कराया रे तेरो नामका।
गुरु गोरख तेरो नामका।।११।।
कहे नाथ विलास मेरे अन्तर आत्मा में गोरख।
मेरी मोक्ष-मुक्ति भी करना तेरो नाम की।
गुरु गोरख तेरो नामकी।।१२।।
श्रीनाथजी गुरुजी को आदेश।

।। गुरु गोरक्ष पुकार (भजन) ।।

गोरक्ष गोरक्ष सुनलो पुकार।
खड़े हुए हम तुम्हरे द्वार।।धृ।।
आदिनाथजी बहुत ही उदार।
भर दो मेरा सब भण्डार।।१।।

ॐ कार शिव तुम अपरम्पार।
सुख सम्पन्न भर दो संसार।।२।।
माया ब्रह्म के तुम हो पार।
कर दो हमको भवसागर पार।।३।।
माया है तेरी बड़ी दुस्तार।
नय्या हमरी कर दो पार।।४।।
सगुण निर्गुण तुम्हारा रुप।
घट घट में है आत्मस्वरुप।।५।।
अलख निरन्जन तुम्हारा नाम।
रोम रोम में बसलो राम।।६।।
गंगा जमना है तुम्हरे पास।
मेरी सरस्वती कर दो पार।।७।।
ज्ञान दीपक जला दो साथ।
अपनी शरण में ले लो नाथ।।८।।
बन बन भटके हम हैं उदास।
तेरे दर्शन की है बड़ी आस।।९।।
नाथ विलास ने किजो पुकार।
साक्ष सतगुरु हमरा जोहार।।१०।।
गोरक्ष गोरक्ष सुनलो पुकार।
खड़े हुए हम तुम्हरे द्वार।।११।।

।। श्री नाथ दर्शन (भजन) ।।

सत गुरु मेरे कृपा जो कीजिए
गुरु गोरक्ष के दरश दिखाए।
अनन्त सूर्य के तेज समाए।
अनूप रूप जो दिख्या न जाए।।
हात खर्पर तुम अलख जताए।
नाथ कुल की रीत बताए।
ऋद्धि सिद्धियां फेर लगाए।
दीप, कलश जल मंगल गाए।।
काल जीत पर अमरता पाए।
सब भूपन को शिष्य बनाए।।
आई माया संग सहेली।
हरष मन तज त्याग विरागी।
कानन कुण्डल नाद पवित्रि।
जती सती जन आये बाराती।
ॐ कार नाद में शंख ही बाजै।
नवनाथ सहित गोरक्ष विराजे।।
धन्य धन्य नवनाथ चौरासी।
धन्य सिद्ध सब अनंत कोटी।।

गुरु मछंदर गोरखबानी।
नाथ सिद्ध ने सिद्ध कर जानी।।
वायु लोक में बजत बधाई।
नाथ विलास ने नम्र हो गाई।।
नाथजी गुरुजी को आदेश-आदेश।।

।। गुरु गोरक्षनाथ महान (भजन)।।

हमारे गुरु गोरक्षनाथ महान्। टेक।
नौ नाथों में नाथ कहावें, अलख पुरुष निर्वान।
भक्तों को वो तारें पलक में, देके योग का ज्ञान।।१।।
ऋद्धि सिद्धि वो देते सबको, करते आप समान।
विद्याओं के दाता जग में, दीनों का सुख दान।।२।।
हरिश्चन्द्र गोपीचन्द्र भर्तृहरि, पृथ्वी नारायण जान।
पूरणमल ज्ञानेश्वर गहनी, कर दीने सरनाम।।३।।
सतयुग त्रेता आदि युगों में, धरते रूप प्रधान।
अनेक रूपों में वे विचरे हैं, जानत कोई सुजान।।४।।
वन पर्वत सागर जल थल में, सत्यलोक परिणाम।
महादेव वे देव सभी में, व्यापक एक समान।।५।।

सर्वशक्ति सर्वज्ञ ज्ञाननिधि, भक्ति मुक्ति की खान।
अलख पुरुष परिणाम शून्य वे, मानों के भी मान।।६।।

हमारे गुरु गोरक्षनाथ महान्।

।। ॐ शिव गोरक्ष योगी।।

।। जय श्री योगी गोरक्षनाथ (भजन)।।

जय-जय नाथ, जय श्री नाथ, जय श्री योगी गोरक्षनाथ।
तारनहार-पालनहार, जय-जय योगी गोरक्षनाथ।।
जिनके प्रबल, दिव्य तेज से आलोकित जग सारा,
सभी शक्तियाँ नतमस्तक हैं, काल भी जिनसे हारा।
ऋद्धि-सिद्धि चंवर ढुलाऐं, दस महाविद्या गायें,
चौंसठ योगिनी चरण पखारें, भैरों मृदंग बजाऐं।
बावन वीर करें वंदना, अपने दोनों जोड़े हाथ,
जय-जय नाथ, जय श्री नाथ, जय श्री योगी गोरक्षनाथ।।
सिद्ध है झोली, सेली, सिंगी, अनन्त कलाधारी,
भगवा बाना, कानन कुण्डल, शंकर के अवतारी।
जिनकी भक्ति को सब तरसें, साधू-सन्त-संसारी,
भक्तजनों पर दयावान वे, दुष्टों पर हैं भारी।

पार्वती जब न पहचानी, तब समझाऐं भोलेनाथ,
जय-जय नाथ, जय श्री नाथ, जय श्री योगी गोरक्षनाथ।।

तंत्र-मंत्र और योग, धरा पर जिनकी कृपा से फलता,
जिनकी भृकुटि देख, दुःख भी अपनी दिशा बदलता।।

अपने भक्तों को करते, मन वांछित फल प्रदान,
जैसी जिसकी भक्ति, वो वैसा करता रसपान।
प्रभु शरण निज राखियो, करे नमन ''शिवनन्दन'' नाथ,
जय-जय नाथ, जय श्री नाथ, जय श्री योगी गोरक्षनाथ।।

।। अलख निरंजन नाथ जी (भजन)।।

कौन सा राग सुनाई नगर में अलख निरंजन नाथ जी
काहे के ढोलक काहे की मजीरा।
कौन ज्ञान ले गाई अलख निरंजन नाथ जी।।
सत की ढोलक मन की मंजीरा।

गुरु ज्ञान ले गाई अलख निरंजन नाथ जी
गुरु तुम्हारे कहाँ रमै है।।
चेला कहाँ रम जाई अलख निरंजन नाथ जी
गुरु हमारे रहे गगन में।
चेला सुरत रम जाई अलख निरंजन नाथ जी
गोरख नाथ गुरु कह समझाई।
भजन करो तर जाई अलख निरंजन नाथ जी

।। गुरु मछन्दर-गोरख का जोग (भजन)।।

सुनो सुनावे सिद्धो गुरु मछन्दर गोरख जोग।
कथनी से करनी मिले, जीव शिव में मिलया योग।।धृ।।
गुरु समान दानी नहीं मांगत शीश समान।
साँच वस्तु को नाम है सत गुरु देई इनाम।।१।।
करद निकारी नाथ ने जम का चीरा कान।
मुन्द्रा डारा ज्ञान का भक्ति दीन्हा दान।।२।।
गोरख को आदेश है सब जीवन का पीर।
माया को चेला करे मारि ज्ञान का तीर।।३।।

सतसंग नाम नाव है चढ़े सकल संसार।
बेड़ा पार उतारि है सतगुरु दीन दयाल।।४।।
सकल सन्त को डडांत चरण नवात्र शीश।
रोवत ढूँढत मैं फिरु मिलहू बिसवा बीस।।५।।
फौज मछन्दरनाथ की गोरख अगुवा कार।
जोग बताया जीव को जम का उतरा भार।।६।।
सुनो सुनावे सिद्धो गुरु मछन्दर गोरख जोग।
कथनी से करनी मिले, जीव शिव में मिलया योग।।ध्रु।।

।। गुरु गोरक्षनाथ जी (भजन)।।

जय जय गोरख गुरु ज्ञानी।
योग क्रिया सुनो गोरख बाणी।
बालरूप लघु जटा बिराजे।
भाल चन्द्रमा भस्म तन साजे।।
शिव योगी अवधूत निरंजन।
सुर नर मुनी सब करते वन्दन।।
चारो युग के आप ही योगी।
अजर अमर सुधारस भोगी।।

योग मार्ग का किया प्रचारा।
जीव असंख्य अभय कर डारा।।
राजा कोटि निन्यानवें आये।
देकर योग सब शिष्य बनाये।।
तुम शिव गोरख राज अविनाशी।
गोरख उत्तर पन्थ का वासी।।
विश्व व्यापक योग तुम्हारा।
नाथ पन्थ शिव मार्ग उदारा।।
शिव गोरक्ष के शरण जो आवे।
होय अभय अमर पद पावे।।
जो गोरख का ध्यान लगावे।
जीवन शरण नहि उसे सतावे।।

।। बिरला ज्ञान (भजन) ।।

कहे गोरख पूरन सुन लीना।
तीन देव गुरु जैसे कीना।।
विष्णु गुरु ब्रह्मा को कीना।
ब्रह्मा ज्ञान अग्नि से लीना।।

महादेव जब जोग फैलाई।
माता उनकी ज्ञान बतलाई।।
या आपस में कौन कहलाई।
है कोई साधु भेद बतलाई।।
कौन थे माता कौन थे भाई।
कौन अलख कौ सुमरे भाई।।
कहें गोरख पूरन सुन ज्ञाना।
या को भेद कोई बिरले ही जाना।।

।। दिक्षा (भजन) ।।

गुरुजी हमको दिक्षा देकर नाद जनेऊ पहनाई
पहले गुरु जी चोटी काटी फिर मंतर कहलाई।
जितना जेवर है जोगी का सब हमको पहनाई।।
झोली झन्डा हमको दीन्हा चिमटा दीजै लाई।
हाथ में मेरे खप्पर दीन्हा तुम्बा देव पकड़ाई।।
कंठी माला रुद्राक्ष दीन्हा जोगी भेष बनाई।
आसन मार धूनी पर बैठूँ भस्मी लेव बढ़ाई।।
गुरु अपने को शीश निवावे सिंगी नाद बजाई।
गोरख कहे सुनो रे बच्चा घर घर अलख जगाई।।
भई कृपा गुरु आनन्दनाथ, नाथ विलास कहलाई।।

।। गुरु चेला (भजन) ।।

कौन देश से आया है कौन देश में बास।
कौन तुम्हारा जीवन है रहो कौन के पास।।
अगम देश से आया, निगम देश में वास।
प्राण हमारा जीवन है अलख गुरु के पास।।
जीव चेतन जब नहि रहा धरती नही अकाश।
तत पाँच काया नही रही कौन के पास।।
चेतन आत्मा पुरुष है धरती नहीं अकाश।
तत पाँच काया जीव ना है जोत प्रकाश।
सत गुरु आगे आगे चले पीछे सब जग ही साथ।
मुक्ति भेद कोई और है कहते गोरख नाथ।।
कौन ध्यान ले आया सतगुरु कौन ध्यान ले जाये।
कौन ध्यान है सन्त पद का सतगुरु देव बताये।।
कहै गोरख सुनो भाई चेले करम आस ले आये।
शुन ध्यान है सन्तपद सुरति ध्यान ले जाये।।

साखी

मन भटकत क्यो बेफ्रिो जब ये थिर होत।
अपने घट में ही देख ले पर ब्रह्मा की जोत।।

।। गुरु चेला सत्संग (भजन) ।।

गुरु- पहले पुन है कि पीछे पाप, पहले गर्भ है कि पीछे साँस ?

चेला- पहले पुन है पीछे पाप, पहला गर्भ है पीछे साँस।

गुरु- पहले भोग है कि पीछे भाग, पहले माई है कि पीछे बाप ?

चेला- पहले भोग है पीछे भाग, पहले माई है पीछे बाप।

गुरु- पहले गुरु है कि पीछे चेला, पहले रात है कि पीछे दिन ?

चेला- पहले गुरु है पीछे चेला, पहले रात है पीछे दिन।

गुरु- कौन साधु कौन साधना, कहा करी कमाई ?

चेला- सत का साधु मन साधना, सुफल करी कमाई।

गुरु- पहले चन्दा है कि पीछे सूरज, पहले मूल है कि पीछे डाल ?

चेला- पहले चन्दा है पीछे सूरज, पहले मूल है पीछे डाल।

गुरु- पहले धरती है कि पीछे आकाश, पहले पवन है कि पीछे पानी ?

चेला- पहले धरती है पीछे आकाश, पहले पवन है पीछे पानी।

गुरु- पहले नाद है कि पीछे बिन्द, पहले सुन्न है कि पीछे अहंकार ?

चेला- पहले नाद है पीछे बिन्द, पहले सुन्न है पीछे अहंकार।

गुरु- कौन सा ब्रह्मा कौन सा देव, कौन सी धोती शब्द जनेऊ।

चेला- मन है ब्रह्मा पवन देव, अलील की धोती शब्द जनेऊ।

गुरु- कौन सा नाद कौन सी पूजा, कौन सा नाम लेय की पूजा ?

चेला- अनहद नाद हाथ लय पूजा, गोरख नाम और ना दूजा।

गुरु- किसने जो देखे बड़े गाजे बाजे,
किसने जो देखे बड़े भूप राजे।
किसने जो देखी, बड़ी क्षेम करनी।
किसने जो देखी, सर्व जगद् जननी।।
किसने जो देखा बिना पंख सूआ।

किसने जो देखा बिना काल मूआ।।

चेला- इन्द्र जो देखे बड़े गाजे बाजे,
सतगुरु जो देखे बड़े भूप राजे।
पृथ्वी जो देखी बड़ी क्षेम करनी।
माता जो देखी सर्व-जगद् जननी।।
मनुआ जो देखा, बिना पंख सूआ।
निन्द्रा जो देखी, बिना काल मुआ।।
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।।

।। अंत (भजन) ।।

रहना नहीं मुल्क में जाना मौत तो बात मेरी मान रे
कर गुजारा चन्द रोजा क्या बंगला गाड़ी मैदान रे।
देवे खुदा जैसा तुझे कर सब्र उस पर हर घड़ी।
या खुदा रहम कर बन्दा रब को इश्क करे।
राजा हुवा दौलत मिली सातो समुन्दर दीप की।
साथ साथ कुछ न चले क्या तख्त फिर सुलताने रे।
कहत गोरख भूल मती हृदय से ले फकीरा।
अलख निरंजन नाम रे।

।। गोरख-ब्रह्म-बाणी (भजन)।।

सुनो सूनो जी गारेखबानी ब्रह्मबाणी सूझबूझ में।
खोजत खोजत खोजनहारा खो गया उस खोजन में।।टेक।।

ना हम जोगी, ना हम भोगी, ना हम जंगम सन्यासी।
ना हम त्यागी, ना हम बैरागी, ना हम उदास तापसी।।१।।

ना हम ब्राह्मण, ना हम क्षत्री, ना हम वैष्णो शुद्रजाती।
ना हम मनुष्य, ना हम दैवत, ना हम कोई जती सती।।२।।

ना हम स्वामी, ना हम सेवक, ना हम वेद विवाद में।
ना हम तीर्थ, ना हम मूर्त, ना हम कैलास धाम में।।३।।

ना हम पोथी, ना हम पत्रा, ना हम एकान्त निवास में।
ना हम पावत,ना हम खोवत, ना हम कुछ चाहत में।।

खोजो, खोजो अन्तरमन में फलाफुला यह विश्वास है।
तब तुरन्त मिले एक ही पल में जो आत्म विश्वास है।।५।।
केवल एक ब्रह्म पर पूरण होई जो सदा अविनाशी है।
नाथ खोजो ज्ञान ब्रह्म को जो पावे नेतीनेती है।।६।।
कहते गोरख अगम की बाणी जाने विरला सन्यासी है।
सत है सब निगम को जाना समझो सब विनाशी है।।७।।
मैं भी झुठा तू भी झूठा झूठा तो सकल संसार है।
एक वो हि ब्रह्म साचा सदा रहा निराधार है।।८।।
चन्दा सूरज पवनपानी पंचतत् फाना ही होते है।
एक वो हि ब्रह्म पूरण अन्त में बना रहता है।।९।।
नहीं ब्रह्मा, नही विष्णु नाही महादेव महेश थे।
करो नाथ गौर तुम तब आदि में कौन उपदेश थे।।१०।।
ऐसे नाथ गोरख बोलत ब्रह्मबानी चौगान में।
भूला ही देने ग्रंथ साहिब बाईबल वेद कुरान में।।११।।

छोड़ दो अब उस परवरदिगार ईश अविनाशी में।
करे भजन नाथ विलास गुरु गोरख के चरण में।।१२।।

सूनो सूनो जी गोरखबाणी ब्रह्मवाणी सूझबूझ में।
खोजत खोजत खोजन हारा खो गया उस खोजन में।।१३।।

श्री नाथजी गुरु जी को आदेश-आदेश-आदेश।

।। दीवाने बन्दे क्या सोचे दर्पण में।।

(भजन)

कहते गोरख दीवाने बन्दे क्या सोचे दर्पण में,
यह काया का कोन भरोसा धूल उड़ेगे तन में।
दर्पण देखे मुख बिचकावे दाग लगावे तन में।।१।।
जैसी करनी करियो भाई वैसे जावे संग में।
पाप पून्य है जन्म संगाती समझ-बूझ ले संग में।।२।।
गुरु बिन कोई पार न जाईयो कोटिन करो नरक में।
गोरख कहे सुनो भाई साधो समझ-बूझ ले जग में।।३।।

।। सोलह कड़ी गोरखनाथ की (भजन) ।।

(क)

ककका कलजुग नाम आधारा,
प्रभु सुमरो भव उतरो पारा।
साधू संग करो रस पीजे,
जीवन जन्म सुफल कर लीजे।।

(ख)

खखख खोजो सकल जहाना,
जाको जावे वेद पुराना।
निरभै नाम हरि का लीजे,
जीवन जन्म सुफल कर लीजे।।

(ग)

गगा गुन गोरख के गाया,
माया जाल भूल तनो जाया।
धन जीवन ज्ञान रंग पतंगा,
छिन में छाये रहे यही अँगा।।

(घ)

घघा घट घट बोले भाई,
जल थल प्रभु रहे समाई।
उँच नीच ज्ञान कर देखो,
एक ब्रह्म सकल जग लेखो।।

(ङ)

ङना निगम खोज कर देखो,
दूज और नहीं कोई लिखो।
सात दीप और ब्रह्मन्डा,
नाम छाये रहे नौ भूः खन्डा।।

(च)

चचा चित मिच कर राखो,
मिथ्या बात झूठ मत भाखो।
सत शब्द पन्त परवाना,
झूठ बचन सो पाप समाना।।

(छ)

छछा छलबल तजो विकारा,
निरभै नाम जपो कर तारा।
काम क्रोध को तजो प्रसंगा,
सदा रहे सन्तन के संगा।।

(ज)

जजा जयो जगत पति इसा,
जाको ध्यान सुरत से खींचा।
निसवासर हरि लव लाई,
हरि सदा सकल सुख दाई।।

(झ)

झझा झारन कीजे भाई,
सिर पे काल रहा मंडलाई।
चेतन होये हरि सरन में रहिए,
काल त्रास काहें को सहिए।।

(ञ)

ञना देही की आदि बताई,
नारी से जग उपजा भाई।
मानुष नारी से पैदा कीन्हा,
पैदा करे मात पिता चीन्हा।।

(ट)

टटा टोरी जगत का नाता,
नहीं कोइ मात पिता सुत भ्राता।
हरि बिन कोई नहीं है अपना,
जग माया की यही है रचना।।

(ठ)

ठठा ठाकुर प्रेम स्नेही,
जिन दीन है सुन्दर देही।
नर देही सुमरन कर लीजे,
प्रेम मगन गोरख रस पीजे।।

(ड)

डडा डमाडोल जन कारा,
हिरदय बहि ग्यान की धारा।
आन देव काहै को धावो,
अपने गुरु को ध्यान लगावो।।

(ढ)

ढढा ढूँढत ही कित भाई,
रोम रोम गुरु रहे समाई।
पिन्ड ब्रह्मन्ड रहे सम पुरा,
सदा निकट रहे ना दुरा।।

(ण)

णणा मात पिता कहलाई,
जिसने जन्म दिया है भाई।
जो कोई उनकी सेवा करई,
जीवन जन्म सुफल कर लेई।।

(त)

तमा तोरी सफल कमाहीं,
गोरख नाम सुमरन को पाई।
नर देही को सुमरन कीजे,
मित्थया जन्म और नहीं कीजे।।

।। चलो रे देखें कौन देश बसे तुम जोगी।।

(भजन)

चलो रे देखें कौन देश बसे तुम जोगी।।धु।।
देख सतयुग द्वापर और,
त्रेता कलयुग में होगा।
दर्शन कीजे गुरु सन्त का,
जन्म सुफल होगा।।१।।
चार जोत अखण्ड जलती,
अस्थल बौहर मठ में देखी।
जैसी धूनी तपे नागों की,
ऐसी और कहीं नहीं देखी।।२।।
गोरख नाथ का बना पुरखा,
नाथ दलीचा हरिद्वार देखा।
गुफा देखी भरतरी जी की,
जहां बहती गंगा देखी।।३।।
स्थान ज्वाला जी में ज्वाला माई।
डिब्बी गोरख में बभूति चलाई।।
उबले जल में शक्ति पारखी।
शीतल जल में ज्वालाई देखी।।४।।

गोरखपुर मे चेताई गोरख धूनी,
त्रेतायुग की चली कहानी।
गोरख चोटी सिद्ध पादुका,
गिरीवर गिरनार में देखी।।५।।
कोला अचल अन्नुपान सिला,
गोदा जन्मी त्र्यम्बक में देखी।
पात्र देवता कदली यात्रा,
माया मछिन्दर की माया देखी।।६।।
गोरख कहै सुनो भाई सिद्धों,
कौन ध्यान देश बसे जोगी।
जिन-जिन देश में बसै व जोगी,
नाथ विलास उनक चरण में लागी।।७।।

।। राजा भर्तृहरि-गोरख भेंट (प्रसंग)।।

मृगानी ने राजा भर्तृहरि-गोरख की जो भेंट कराई।।धु।।
राजा भर्तृहरी चले बन में सोच समझ चतुराई।
लिना घोड़ा रंगाचंगा संग अस्त्र शस्त्र दलु सिपाई।।१।।

पहूचा बनखण्ड में मृगा झुण्ड को देख लगे निशानी।
मचा हाः हाकार जंगल मृगा भागे आपने जान बचाई।।२।।
बोलि मृगनी जब मृगा से कहके बात समझाई।
भाग चलो जी मधुबन से जान अपनी बच जाई।।३।।
तब बोले मृगा सूनो मृगनी काहे कु तुम घबराई।
भाग्य लिख सौ होवे जैसा मीट सकेना कोई।।४।।
तब हताष मृगनी गयी फिर राजा को बात समझाई।
मेरा मृगा को नही मारना, मुझ मृगनी को मार ले जाई।।५।।
बोले भर्तृहरि सुनो मृगनी जरूर हम मृगा कोही मारी।
नारीरूप तुम मृगनीपर क्षत्री कैसे वार करमारी।।६।।
खेचाबान राजा ने मृगा पर प्राण परवेरू उड जाई।
मृतमृगा देखन मृगनी रूदन रूदन हृदय भर आई।।७।।
दिले दर्द दुख विरह से मृगनी शाप बानी सुनवाई।
जैसे राण्ड हमको किन्हा तुम भी राण्ड हो जाई।।८।।
चली मृगनी बच्चे मिलके गोरख धुनी पर जाई।
सारी विपदा कह सुनाई गोरख नाथ को समझाई।।९।।

रक्ष-रक्ष गोरक्ष रक्षा कर मम विपदा आन पड़ आई।।
उठकर गोरख चले दयाधन राजा को रोक लगाई।।१०।।
क्या तेरा बिगाड़ा मृगाने, क्या हक तून क्यो मरवाई।
खोल दे मृग्या अब जल्दी से नहीं तो काल शिश पर आई।।११।।
रांड किया इस मृगनी को तुने क्या लाज शर्म ना आई।
बोले राजा नहीं खोलेगे मृगा को करो तुम लाख चतुराई।।१२।।
जितने जोगी मठ में तेरे सबको दूंगा जेल भिजवाई।
जरा हम भी जाने ऐसा क्या जोगी जो मृगा जिन्दा करलाई।।१३।।
अगर मृगा जिन्दा हुयी तो हम तेरो चेला हो जाई।
पड़ी भबूती जब गोरख ने मृगा झट जिन्दा कर दिखलाई।।१४।।
उठकर मृगा गया झुण्ड में तब सब मृगनी हरषाई।।
चेला भर्तृहरि नाथ बनके गोरख के गुण गाई।।१४।।
नाथ विलास गुरु चरण में कथा सरस गवायी।।

।। कितना बदल गया इन्सान (भजन) ।।

सूनौ भाई साधो कहते गोरख कितना बदल गया इन्सान
चांद न बदला सूरज न बदला नहीं बदला आसमान।
नौ लख तारा ना बदला ना बदला जल और पान।।
कितना.....।।१।।

धरती पवन एक नहीं बदला नहीं बदला भगवान।
रात न बदली दिन न बदला क्या सोवे अभिमान।
कितना.....।।।।

दया धरम कभी न बदले जो दानी का दान।
पाप-पुन्य तेरे साथ चलेगें क्या सोचे बेईमान।।
कितना.....।।।।

सतवती का सत न बदले चाहे बदले जहान।
गोरख कहें सुनो भई साधु अटल रहेगा मेरा ज्ञान।।
कितना..... ।।।।

साखी

लागी लागी सब कहे लागी नाही न ऐक।
लागी वाको जानिये घाव न आवे ऐक।।

।। श्री नाथ दरबार (भजन) ।।

आदेश आदेश मेरे सद्गुरु नाथा, मेरे सिद्ध नवनाथा।

नवही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।। टेक।।

देखो सिद्ध आये कैसे नाथ दरबारा.....कैसे नाथ दरबारा।

बीच सिद्धों के चेते सिद्धों का धूना।

आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।

नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।१।।

जती गोरक्षनाथ आये नाथ दरबारा.....आये नाथ दरबारा।

बैठे उच्चासना जैसे ज्योति के स्वरूपा

आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।

नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।२।।

ॐकार आदिनाथ आये नाथ दरबारा..... आये नाथ दरबारा।

डम-डम डमरू बाजे सूत्र चौदह विद्या।

आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।

नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।३।।

आदिमाया शक्ति आयी उदयनाथा..... आयी उदयनाथा।
धर्ती के अवतार, दया क्षमा के रूपा।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।४।।
सत्यनाथ ब्रह्मा आये नाथ दरबारा..... आये नाथ दरबारा।
चारों वेद शास्त्र पढ़े ब्रह्माण्ड ज्ञाना।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।५।।
विष्णु अवतार आये सन्तोषनाथा..... आये सन्तोषनाथा।
सन्तों के सन्तोषा हरि उद्धारी जगा।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।६।।
नाथ दरबार आये अचल अचम्भेनाथा..आये अचम्भेनाथा।
शेष शाहि अवतार भार सृष्टि को तारा।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।७।।

देखो सिद्धों आये गणेशनाथा.... आये गणेश नाथा।
संग ऋद्धि सिद्धि गज कन्थड़नाथा।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।८।।
सिद्ध चौरंगीनाथ आये नाथ दरबारा.... आये नाथ दरबारा।
अजर, अमर भये पूर्णांग काया।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।९।।
माया संग आये मत्स्येन्द्रनाथा.... आये मत्स्येन्द्रनाथा।
शिव शक्ति के पूता भया ॐकार नादा।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।१०।।
अनन्त कोटी बैठे चौरासी सिद्धा.... बैठे चौरासी सिद्धा।
धन्य धन्य सन्ता, किया जय जय ॐकारा।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।११।।

निराकार नाथ भये साकार रूपा.... भये साकार रूपा।

अन्दर ज्योति ज्वाला पंच तत्व की काया।

आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।

नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।१२।।

अस्थि मास मज्जा सिद्ध काया निर्माना.... सिद्ध काय निर्माना।

भया शून्य मन देखा अन्तर आत्मा।।

आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।

नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।१३।।

देखा नाथ दरबार गुरु आनन्द कृपा.... गुरु आनन्द कृपा।

नाथ विलास कहे छन्द भजनी लाग्या।

आदेश आदेश मेरे सद्गुरुनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।

नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा।।१४।।

साखी

बार-बार विनती करूँ सुनिये गोरखनाथ।
भूला ज्ञान बतलाइए चरण नवाऊँ माथ।।

।। सन्त महिमा (भजन) ।।

प्रेम नगर के साधु हम।
चारों दिशा में जाते हैं।
रुखी सूखी पाकर हम।
गुरु गुण को गाते हैं।।१।।
बुद्धि हमारी माता है।
ज्ञान हमारा पिता रे।
विवेक हमारा शस्त्र है।
गुरु गोरख दाता रे।।२।।
कर्म हमारी खेती है।
शब्द हमारी सिद्धि रे।
प्रेम हमारा भोला है।
धर्म से हमारा नाता रे।।३।।
भक्त हमारे भावुक है।
भाव हमारा साफ रे।
भक्ति हमारी शक्ति है।
गुरु नाम से मुक्ति रे।।४।।
सन्त हमारे भगवान हैं।
त्याग हमारी शान रे।
सत्य हमारा ईश्वर है।
ना मांगे भी जो देता है।।५।।

भेष हमारा बलवान है।
भगवा अलख निशान रे।
सतगुरु हमारा आनन्द है।
जिनकी बाणी धार रे।
कृपा हम पर अगाध है।
नाथ विलास जो गात रे।।६।।
प्रेम नगर के साधु हम।
चारों दिशा में जाते हैं।
रुखी सूखी पाकर हम।
गुरु गुण को गाते हैं।।७।।

।। सिरबदा (भजन) ।।

तो हे दर्शन दें भगवान, बना मन मन्दिर आलिशान....

१. मन्दिर-मस्जिद में जाता, वहां खाली हाथ ही आता।
तुझे मिला नहीं है निशान, अभी तू भटक रहा नादान।।
तो हे दर्शन.....

२. सत्संग आदि में जाता, तू विषय समझ नहीं पाता।
इस माया भ्रम को जान, भेजदे तुझको ये श्मशान।।
तो हे दर्शन.....

३. तू वेद-शास्त्र ल्याता, पढ़ बिरथा हमें गवाता।
क्यो वाद-विवाद बढ़ता अभी तुझे हुआ नहीं है ज्ञान।।
तो हे दर्शन.....

४. इस काम-क्रोध को त्यागो, और हरि भजन में लागो।
ये मिट जाय मद और मान, सम्भव कर चलता रह इन्सान।।
तो हे दर्शन.....

५. गुरु विलास नाथ समझावे, ये गया समय नहीं आवे।
क्यों बिरथा गाल बजावे हिमालयनाथ करे तू ध्यान।।
तो हे दर्शन.....

साखी

ब्रह्मा विष्णु सही है शंकर नाम आधार।
जैसे सूरज बिन दिया कोटिन दिया चाहे बार।।
जैसे सूरज के तेज से अग्नि का औतार।
ऐसे सतगुरु जीव को जीवन को निस्तार।।
शिव गोरख यहाँ मन्त्र है सर्व सुखों का सार।
जपै बैठ एकान्त में तन की सुध बिसार।।

।। चेतावनी (भजन) ।।

अरे क्या सोवे सुख की नींद मुसाफिर देश बिराना,
ये देश बिराना है मुसाफिर देश बिराना है क्या.....
१. इस देश बिराने आके तू बैठा किला बनाके
विषयों से नेह लगाके है नहीं नाम पैछाणा रे।।
२. पिछली पूँजी सभी गवाई, तुने कुछ ना करी कमाई।
क्या कहेगा उस घर जाई देना कर्ज पुराना रे।।
३. सब माल (स्वास) खो दिया सो के, अब बैठा रीता होके।
अरे क्या स्थान दिखावे रो के, पहले हुआ न स्याणा रे।।
४. इस तन सराय में बसके, सारा जगत मर लिया फंस के।
कोई उतरया मन को कसके, जिन गुरु शब्द ही पिछाणा रे....
५. विलासनाथ कह कमर कसले, नर देह घरे का जस ले।
हिमालय नाथ अमरपुर बसले, फेर नहीं जग में आणा रे....

।। बंगला (भजन) ।।

बंगला देख्या नजर धूमार, जिसमें आनन्द रूप अपार।....

१. आसन मार जुगत सूँ बैठा, बन्द किये सब द्वार।
सम, दम, सार सरोदा लाये, डाटी सूरता नार।।
बंगला.....

२. ढोलक, शंख नंगारी बाजे बिणा और ईकतार।
बिना बजाएं निस दिन बाजे, अनहद की झंकार।।
बंगला.....

३. बिना बादली अमृत बरसे, लग रही एकणधार।
पीवत प्राण अति सुख पावे, हो ज्या भव जल पार।।
बंगला.....

४. आनन्द नाथ दादा गुरु म्हारे, विलास नाथ हरिद्वार।
हिमालय नाथ शरण सतगुरु से हो ज्या बेड़ा पार।।
बंगला.....

।। कैलाश पर्वत (मुक्ति धाम) ।।

कैलाश मानसरोवर पर आगे आगे गोरख जागे

निवेदन :– यह भजनों का आनन्द आप अपनी तीर्थ यात्राएं जो कि कैलाश मानसरोवर यात्रा, चार धाम यात्रा, अमरनाथ यात्रा, बारह ज्योर्तिलिंग यात्रा, आदि यात्रा में विशेष पर्व शिवरात्रि–कांवड मेला–प्रदोष व्रत–शिव जागरण आदि प्रसंगी इन भजनों द्वारा भक्ति को प्राप्त कर शिवानन्द, भक्तिानन्द तथा आत्मानन्द ले सकते है।

✸ कैलाश मानसरोवर यात्रा ✸

प्रसंग– जब सन् २००७ श्रवण मास में हम (अलख क्षेत्र–शिवधाम –शम्भु निवास) जो कैलास मानसरोवर की यात्रा कर रहे थे, तब निम्न प्रार्थनाये, यह भजन, यह गीत, यह अन्तरनाद, यह भक्ति भरे अनमोल स्वर जो पवित्र भजनों को गाते थे, सुनते थे। आज भी इन स्वरों की गुंजन हमें आनन्द का अनुभव कराती है।

।। ॐ मंगलम्-ॐ कार मंगलम् (भजन) ।।

ॐ मंगलम्, ॐ कार मंगलम्, ॐ नम शिवाय मंगलम.....

ना मंगलम् न-कार मंगलम्
नाद बिन्दु कलातित् वेद मंगलम्।।
ॐ मंगलम् ॐ कार.....।।१।।

मा मंगलम् म-कार मंगलम्।
महादेव दयासिन्धु ईश मंगलम्।।
ॐ मंगलम् ॐ कार.....।।२।।

शिव मंगलम् शिवाय मंगलम्।
सिद्ध बुद्ध आत्म रूप वेद मंगलम।।
ॐ मंगलम् ॐ कार.....।।३।।

वा मंगलम् व-कार मंगलम्।
वाद भेद रहित पर ब्रह्म मंगलम्।।
ॐ मंगलम् ॐ कार.....।।४।।

या मंगलम् य-कार मंगलम्।
यथा तत्त्व परीज्ञान वेद मंगलम्
ॐ मंगलम् ॐ कार.....।।५।।

।। कैलाश में नाच रहे भोले बाबा (भजन) ।।

आज तो कैलाश में बाज रहा डमरू।
नाच रहे भोले बाबा पायल बाजे घुंगरू।।
अलख निरंजन, अलख निरंजन, बोल रहा डमरू।
नाच रहे भोले बाबा पायल बाजे घुंगरू.....।।१।।
गौरा शंकर गौरा शंकर-बोल रहा डमरू।
नाच रहे भोले बाबा पायल बाजे घुंगरू.....।।२।।
पतीत पावन सिताराम-बोल रहा डमरू।
नाच रहे भोले बाबा पायल बाजे घुंगरू.....।।३।।
राधा कृष्णा राधा कृष्णा बोल रहा डमरू।
नाच रहे भोले बाबा पायल बाजे घुंगरू.....।।४।।
गोरख नाथ गोरख नाथ बोल रहा डमरू।
नाच रहे भोले बाबा पायल बाजे घुंगरू.....।।५।।
ईश्वर अल्ला तेरो नाम बोल रहा डमरू।
नाच रहे भोले बाबा पायल बाजे घुंगरू.....।।६।।
सबको सम्मती हे भगवान बोल रहा डमरू।
नाच रहे भोले बाबा पायल बाजे घुंगरू.....।।७।।
आज तो कैलाश में बाज रहा डमरू।
नाच रहे भोले बाबा पायल बाजे घुंगरू।।

।। भोले तेरे कैलास में ज्योत जले ।।

(भजन)

भोले तेरे कैलास में जोत जले।।धु।।
तेरे कैलास में गौवे नहीं, बछड़ा नहीं
दही दुध के तो मटकी भरे।
भोले तेरे कैलास में ज्योत जले.....।।१।।
तेरे कैलास में अन्न नहीं, भोग नहीं
योगामृत के तो थाल भरे।
भोले तेरे कैलास में ज्योत जले.....।।२।।
भोले तेरे कैलास में दीपक नहीं, बत्ती नहीं
निर्गुण आत्मज्योत जले
भोले तरे कैलास में ज्योत जले.....।।३।।
कहे नाथजी सुन भाई सिद्धों
जीव-शिव में ज्योत जले
भोले तेरे कैलास में ज्योत जले.....।।४।।

।। कैलाश में डमरू बजाया (भजन) ।।

भोले बाबा ने ऐसा बजाया डमरू, बजाया डमरू
सारा कैलाश पर्वत मगन हो गया.....।।
रामा ने सुना लक्ष्मण सुना-२
वहा सीता का मन भी मगन हो गया।
भोले बाबा ने .....।।१।।
सुन डमरू कि आवाज ब्रह्मा चले जहा
ब्रह्मा चले वहा विष्णु चले-२
वहा लक्ष्मी का मन भी मगन हो गया।
भोले बाबा ने .....।।२।।
सुन डमरू कि आवाज गंगा चली,
जहां गंगा चली वहा यमुना चली-२
वहा सरयु का मन भी मगन हो गया
भोले बाबा ने.....।।३।।
सुन डमरू कि आवाज सूरज चले,
जहां सूरज चले वहा चन्दा चले-२
वहा तारो का मन भी मगन हो गया।
भोले बाबा ने .....।।४।।

सुन डमरू कि आवाज मछिन्दर चले,
जहा मछिन्दर चले वहा गोरख चले-२
वहा सिद्धों मन हि मगन हो गया
भोले बाबा .....।।५।।
भोले बाबा ने ऐसा बजाया डमरू बजाया डमरू
सारा कैलाश पर्वत मगन हो गया।

।। गंगा-प्रवाह (भजन)।।

हर हर गंगा माई, जय श्री गंगा माई।
बोलो-बोलो, हर हर गंगा माई जय श्री
गंगा माई .....।।
स्वर्ग लोग चलकर मैया मृत्यु लोग में आई-२
जब शंकर जटा समाई।।
हर हर गंगा .....।।१।।
शंकर जटा चलकर मैया गंगाद्वार में आई-२
जब श्री गंगोत्री कहलाई।।
हर हर गंगा .....।।२।।
गंगोत्री से चलकर मैया हरिद्वार में आई-२
तब हरकी पौड़ी कहलाई।।
हर हर गंगा.....।।३।।

हरिद्वार से चलकर मैय्या इलाहाबाद में आई-२ ।
और त्रिवेणी ही कहलाई।।
हर हर गंगा.....।।४।।
इलाहाबाद से चलकर मैय्या सागर में समाई-२
गंगा सागर कहलाई।।
हर हर गंगा.....।।५।।
युगो युगो से चलकर मैय्या पाप नाशनी कहाई-२
और मोक्ष मुक्तिनी कहलाई।।
हर हर गंगा माई, जय श्री गंगा माई बोलो बोलो
हर हर गंगा माई जय श्री गंगा माई.....।।६।।

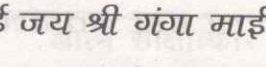

।। बडा ही भोला भाला है (भजन)।।

डम डम डमरू वाला बड़ा मत वाला, बड़ा ही भोला भाला है। बड़ा ही भोला भाला है, बड़ा ही भोला भाला है।।
बाये अंग में गौरजा विराजे-गौरजा विराजे-
और गोद में गणपती बाला, बड़ा ही भोला भाला है
डम डम डमरू वाला.....।।१।।

सिरपर उनके गंगा विराजे-गंगा विराजे-
और गले में सर्पो कि माला-बड़ा ही भोला भाला है।
डम डम डमरू वाला.....।।२।।
हाथ में उनके डमरू विराजे, डमरू विराजे-
और पहने को है मृगछाला-बड़ा ही भोला भाला है।।
डम डम डमरू वाला.....।।३।।
ध्यान में उनके ज्योति ही विराजे-ज्योति ही विराजे।
*और जोत से गोरखबाला-बड़ा ही भोला भाला है।
डम डम डमरू वाला बड़ा मतवाला बड़ा ही भोला भाला है।
बड़ा ही भोला भाला है, बड़ा ही भोला भाला है।
बड़ा ही.....।।४।।
ॐ नमः शिवाय। ॐ नमः शिवाय।।

*नोटः– श्री नारद पुराण तथा स्कन्द पुराण के प्रमाणानुसार और नाथ सम्प्रदाय की मान्यतानुसार गुरु गोरक्षनाथ जी का जन्म कैलास पर्वत, अलख क्षेत्र अर्थात् वायु लोक में भगवान शिव जी ने ज्योति का निर्माण कराकर उस ज्योति में बालरूपी जती गोरक्षनाथ जी का जन्म हुआ है।

।। ध्यान साधना ।।

आत्म साक्षात्कार

निवेदन :– इस प्रकार आप अपने ईष्ट की पूजा, अर्चना, आरती, प्रार्थना, भजन करने के पश्चात शान्त एकान्त वातावरण में इन ईष्टों के संमुख नरम–गरम आसान पर बैठे प्रथम श्री गणेशाय नमः फिर अपने सद्गुरु को नमन करके अपने–अपने गुरु मन्त्र का या प्रिय ईष्ट का मन्त्र जाप कम से कम सवा घण्टा करे। ऐसा नित्य करने से आप जाप साधना से ध्यान साधना में प्रवेश करके ईष्टमय, ज्ञानमय, आत्मानन्दमय हो जाओगे–मुक्त हो जाओगे–लय हो जाओगे।

अलख निरंजन.....आदेश। आदेश।।

।। उपसंहार ।।

योग सनातन सिद्ध का, किया प्रारंभ ॐकार।
आदिनाथ संग शक्ति ने, प्रगटा ज्ञान प्रकाश।।१।।

गुरु मछन्दरनाथ ने, दिया ज्ञान प्रमाण।
जती गोरख योग का, उंचा गगण विहार।।२।।
नवनाथ चौरासी सिद्ध ने, जन मानस मन जोत।
गुरु-शिष्य परमात्म की, जोड़ दी है प्रीत।।३।।
सद्गुरु आनन्दनाथजी, कीजो कृपा अपार।
शिष्य नाथ विलास ने किया काव्य साकार।।४।।

।। सद्गुरु धुन।।

अलख निरंजन सद्गुरु साजे।
तहाँ विश्वम्भर आप विराजे।।
अलख निरंजन.....अलख निरंजन.....

।। गोरक्ष धुन।।

जय जय नाथ शिव गोरक्ष नाथ।
जय जय नाथ शिव गोरक्ष नाथ।।

।। ब्रह्म स्वरूप (पूर्ण) ।।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा वशिष्यते।।

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ

योगी महासभा

—: पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड)

फोन : 01334-226583

web site : www.yogigorakshnath.org

e-mail : media @ yogigorakshnath.org

*

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह. जिला रोहतक (हरियाणा), फोन : 234804

— नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन —

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	180/-
2. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	250/-
3. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	400/-
4. श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	55/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
5. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
6. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	125/-
7. श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	35/-
8. श्री प्राचीन भर्तृहरी गुफा महात्म्य (देश-विदेश के नाथ सिद्धों के तीर्थ स्थलों के पते/ विवरण)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	30/-
9. श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	6/-
10. श्री गोरक्ष तंत्रम (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	100/-
11. श्री नाथ सम्प्रदाय आरती-भजन संग्रह	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
12. श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तत्र टोटके	महावीर सैनी (गुरु योगी विलासनाथ जी पुजारी)	120/-
13. योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	30/-
14. गोरक्ष स्तवांन्जलि	योगी भंभूलनाथ जी	12/-
15. श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-
16. शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	10/-
17. भर्तृहरि निर्वेदनाटकम्	महाकवि हरिहर रचित	5/-
18. अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	10/-
19. गुरु गोरक्षनाथ शब्दावली (भजन)	महन्त सेवानाथ जी	15/-
20. श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	70/-
21. सिद्ध प्रयोग चिकित्सा	योगी वीरनाथ जी	8/-
22. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	20/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
23. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/-
24. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	15/-
25. चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
26. दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
27. श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
28. श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
29. श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
30. श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-
पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	**लेखक/संचालक**	**मूल्य**
31. गोरखबाणी	रामलाल श्रीवास्तव	50/-
32. गोरख चरित्र	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
33. गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी)	अक्षय कुमार बेनर्जी	90/-
34. गोरख दर्शन	विजय पाल	50/-
35. श्री नाथ सिद्ध चरितामृत	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
36. गोरक्षनाथ एवं उनकी परंपरा का साहित्य	डा. दिवाकर पाण्डेय	40/-
37. आदर्श योगी	अक्षय कुमार बेनर्जी	25/-
38. योगासन	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
39. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
40. गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह	रामलाल श्रीवास्तव	40/-
41. हटयोग प्रदीपिका	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
42. योग बीज	रामलाल श्रीवास्तव	15/-
43. नाथ योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	15/-
44. अमनस्क योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	20/-
45. गोरक्ष पद्धति	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
46. गोरक्ष शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
47. वैराग्य शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-

48. गौरक्ष वैदिक पूजा पद्धत	वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी	20/-
49. विचार दर्शन (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ...ने कहा)	योगी आदित्यनाथ	20/-
50. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह)	मनोहर द्विवेदी	15/-
51. योगवाणी अंक (गोरखबाणी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
52. योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
53. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक)	गोरखनाथ मन्दिर	40/-
54. योगवाणी (शिव संहिता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
55. योगवाणी (सिद्ध दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
56. योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
57. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
58. योगवाणी (गोरक्ष सिद्धान्त)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
59. योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
60. योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
61. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
62. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
63. योगवाणी (विशेषांक 1994)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन(1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

MP3-DVD-VCD (सी.डी.)

		MP3	DVD VCD
अमृतांजलि (भाग-1) गोरक्ष चालीसा,भजन इत्यादि	गायक-सोमनाथ शर्मा	35/-	50/-
अमृतांजलि (भाग-2) चौरासी सिद्ध चालीसा,भजन इ०	भजन रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्रीनाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)कम्प्यूटर फ्लॉपी	रचना-योगी विलासनाथ	45/-	

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5"X3.5"	3/-	-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र
(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3× 3 इंच	40/-	50/-
5×5 इंच	60/-	70/-
7×7 इंच	85/-	100/-
9×9 इंच	250/-	265/-
12×12 इंच	290/-	310/-

कैमरा फोटोग्राफ
गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ,भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय–प्रासंगिक (चरित्रानुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटा	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P/C=5" X 3.5"	5/-	-
बड़े फोटो B/C=7" X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B/C=7"X5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB/C=10"X5"	25/-	
बड़ा फोटो B,B,B/C=10" X 8"	35/-	-

यन्त्र (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	5/-	65/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	5/-	65/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	5/-	65/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	5/-	65/-
उपरोक्त चारो यन्त्रों का सैट	20/-	250/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3×2 इंच, 5×3.5 इंच, 7×5 इंच)	20/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 220/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	3/-, 5/-, 6/-, 20/-, 15/-, 25/-, 30/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉकेट	5/-, 8/-, 10/-, 12/-, 20/-, 30/-
(नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	25/-, 10/-, 40/-, 40/-, 20/-, 60/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-

मूर्तियाँ

नाम	साईज	वजन	मूल्य पीतल	मूल्य ब्रास (पीतल की पालिश)
1. गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	9"	2 Kg	1100/-	800/-
2. गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6"	1 Kg.	800/-	700/-
3 आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10"	1.300gm.	900/-	600/-
4. आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6"	600gm.	300/-	
5. बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9"	2 Kg.	1100/-	800/-
6. बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6"	1 Kg.	800/-	700/-

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोटः- मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम D. D. भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा V.P. L., V.P.P. से भेजा जायेगा।

अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

श्री नाथ रहस्य

श्री गोरक्ष तंत्रम्

श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल

श्री गोरक्षनाथ सिद्ध चालीसा

नवनाथ

प्राचीन भर्तृहरि गुफा महात्म्य

Sri Nath Siddha Kavacam

श्री नाथ सिद्ध पाठ

श्री नाथ सिद्ध कवचम्

-: पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401

(उत्तराखण्ड)

फोन : 01334-226583

श्री सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह. जिला रोहतक

(हरियाणा)

फोन : 234804

पश्चिम
श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)
(प्राचीन भर्तृहरि गुफा)
मनसा देवी मन्दिर
मनसा माता पैदल मार्ग
उड़नखटोला
रेलवे स्टेशन
बस स्टैण्ड
शिवमूर्ति चौक
अपर रोड
कनखल रोड
पालिका बाजार
गली रामप्रसाद
भीमगोडा रोड
कनखल रोड
मोती बाजार
बड़ा बाजार
सुभाष घाट
सुभाष घाट
गंगा घाट
राजघाट पुल
संजय पुल
हरकी पौड़ी ब्रह्मकुण्ड
पतित पावनी माँ गंगा जी
दक्षिण
उत्तर
पूर्व

राजा भर्तृहरि श्रृंगार शतक, नीति शतक व वैराग्य शतक तीनों के रचयिता थे। श्री योगाचार्य गुरू गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। राजा भर्तृहरि ने उज्जैन-मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण कर यहां तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहां विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हर की पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट : हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

-: पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

Visit us at: www./yogigorakshnath.org, e-mail:media@yogigorakshnath.org
Ph. 01334-226583

मुद्रक-शिव शक्ति प्रिन्टर्स, अपर रोड, हरिद्वार। फोन-228796